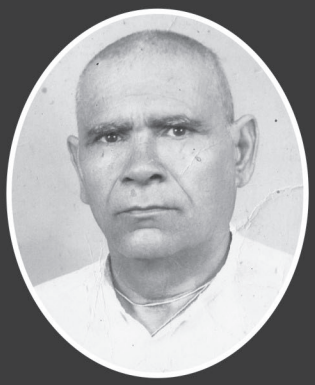

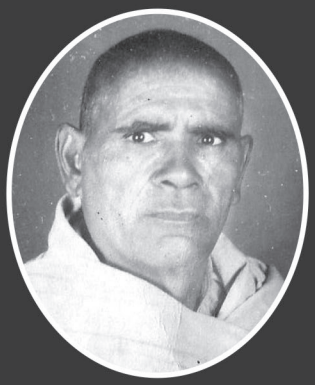

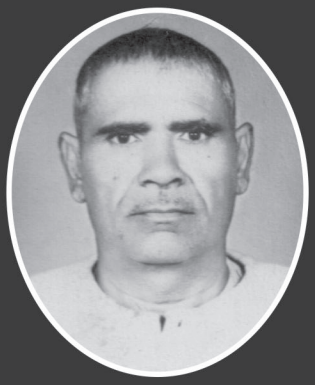

ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

जनवरी, 2015

दिवंगत पं. चन्द्रभानु जी आर्य

देहावसान : पौष शुक्ला द्वितीया (23 दिसम्बर) 2014 ई.

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
सः जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।।

अंतिम यात्रा (24 दिसम्बर 2014)

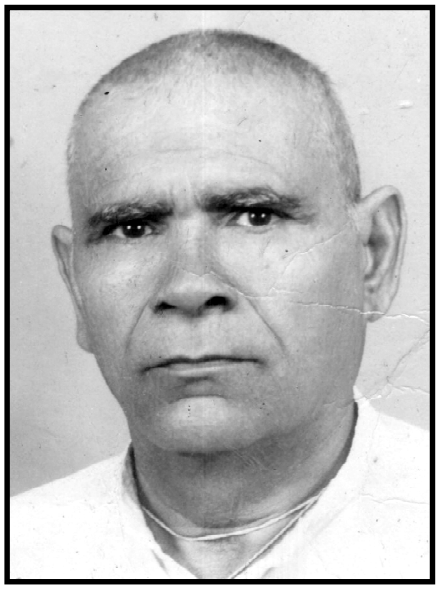

संस्थापक एवं आद्य सम्पादक

पं० चन्द्रभानु आर्य

सम्पादक : **सहदेव समर्पित**
(चलभाष ०६४१६२-५३८२६)
उपसम्पादक : **सत्यसुधा शास्त्री**
प्रबंध संपादक : **सुभाष श्योराण**
आदरी सम्पादक : **यज्ञदत्त आर्य**
सह-सम्पादक : **राजेशार्य आट्टा**
डॉ० विवेक आर्य
नरेश सिहाग बोहल
सहयोग : **आचार्य आनन्द पुरुषार्थी**
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
विधि परामर्शक : **जगरूपसिंह तंवर**
कार्यालय व्यवस्थापक : **रविन्द्रकुमार आर्य**
कम्प्यूटर सज्जा : **बिशम्बर तिवारी**

सहयोग राशि

एक प्रति	: १०.०० रु॰
वार्षिक	: १००.०० रु॰
आजीवन	: १०००.०० रु॰

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

शान्तिधर्मी

जनवरी, २०१५

वर्ष : १६ अंक : १२ माघ २०७१ विक्रमी
सष्टि संवत्-१६६०८५३११५, दयानन्दाब्द : १६२

क्या? कहाँ?....

आलेख

उनका जीवन ही यज्ञ हो गया	४
महाप्रयाण	६
संक्षिप्त जीवन परिचय महाशय चन्द्रभानु आर्य	७
गणमान्य व्यक्तियों ने दी श्रद्धांजली	१०
महाशय चन्द्रभानु आर्य के निधन से अपूरणीय क्षति : श्रद्धांजलियाँ	११
अन्तिम प्रवचन : मेरा मन शुभसंकल्पों वाला हो	२४
कुछ प्रेरक रचनाएँ	२५
मृत्यु अटल सत्य है	२७
धर्म प्रचारक (वेद मंत्र)	२९
योग का मुख्य प्रयोजन	३१

जिसने सत्य को पा लिया उसे मृत्यु का भय नहीं होता है,
जिसे मृत्यु से ही भय नहीं वह फिर किससे डरेगा।
स्व० पं० चन्द्रभानु आर्य

कार्यालय :
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द–१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ६४१६२–५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

शान्ति प्रवाह

उनका जीवन ही यज्ञ हो गया!

शांतिप्रवाह के प्रवर्त्तक हमारे पूज्य पिता श्री चन्द्रभानु आर्य का ८५ वर्ष की आयु में भी इस तरह चले जाना पूरी तरह से अप्रत्याशित था। वैसे तो मृत्यु छोटे बड़े को नहीं देखती, आयु को नहीं देखती, और इस अवस्था को पर्याप्त भी कहा जा सकता है, पर उनकी सक्रियता को देखते हुए हम अभी ऐसा सोचने को तैयार नहीं थे। पिता की छाया वटवृक्ष की तरह होती है, जिसके होते हम परिवार और समाज की सभी बातों से निश्चिंत थे। वे तो हमारे पिता भी थे, गुरु भी थे और इस वृद्धावस्था में तो हमारे मित्र भी थे। लेकिन जिस तरह उन्होंने अपना जीवन विरक्त की तरह जिया, उसी तरह वे प्रयाण भी कर गए। वे उस क्षतिग्रस्त वृद्ध शरीर में क्यों रहते? जिस शरीर के माध्यम से उस पवित्रात्मा ने हमें जीवन दिया, हमारा पालन पोषण किया और हमें समाज में खड़े होने के लायक बनाया, हमें सस्कार दिए, उसका ऋण तो कभी चुकाया ही नहीं जा सकता।

उनका जीवन वास्तव में विरक्तों का सा जीवन था। वह विराट् व्यक्तित्त्व पता नहीं कितना समाज का था और कितना परिवार का! लेकिन दोनों क्षेत्रों में उन्होंने सामान्य से अधिक कार्य किया। परिवार में सर्वहितकारी नियमों का पालन करते उन्होंने कभी विशेष दखल नहीं दिया, पर जिनमें परिवार का अहित होने की संभावना हो, ऐसे कार्यों में वे दृढ़ निर्णय लेते थे और हर कीमत पर उस पर स्थिर रहते थे। आर्थिक रूप से कभी शैशवावस्था में समृद्धि देखी हो तो देखी हो, अन्यथा वे संघर्षरत ही रहे। लेकिन जब से हमने होश संभाला, उन्हें अर्थ के मामले में कभी परवाह करते नहीं देखा। जब धन आता भी था तो वे उसका प्रयोग संन्यासियों की तरह करते थे। उनका ईश्वर विश्वास गजब का था। यही कारण था कि धन चाहे नहीं रहा, पर कभी कोई काम रुका भी नहीं। उनका तप व्यावहारिक था। हर स्थिति में गुजारा कर लेते थे। हम अपनी छोटी बुद्धि के कारण किसी अभाव का रोना रोते या किसी विशेष सुविधा की इच्छा व्यक्त करते तो हमें अपने गुरु स्वामी भीष्म जी की शिक्षा बताते कि अपनी आवश्यकताएँ इतनी रखो जिनको तुम जीवन भर निभा सको।

वे सच्चे आदमी थे। जो अन्दर थे वही बाहर थे। किसी आदमी के प्रति मन में कड़वाहट हो, और वे ऊपर ऊपर मीठा बोलते रहें, ऐसा उनसे कभी नहीं हुआ। उससे बिगाड़ ही ली। चाहे परिवार की बात हो, रिश्तेदारों की या समाज की। उनको जानने वाले उनकी इस विशेषता को समझते थे। इसलिए प्रायः उनके शत्रु नहीं थे। उनकी साधारणता, सरलता, निश्छलता ही उनकी पूंजी थी। यह उनके तप का प्रभाव था कि समाज के बड़े बड़े नेता, तपस्वी, साधु संन्यासी हमारे कच्चे घर में आते थे और हमारे साथ परिवार और अपने बच्चों की तरह व्यवहार करते थे।

८५ वर्ष में सामान्य मान्यता के अनुसार चार पीढ़ियाँ समाप्त होने को होती हैं। उनके तप और प्रभाव को प्रत्यक्ष देखने वाले लोग भी अब कम रह गए हैं। हमने अपना होश संभालने के बाद उन्हें बड़े बड़े मंचों पर बोलते सुना है। उनकी आवाज भी मर्दों वाली थी और आचरण भी। उनके होने से बड़े-बड़े जलसे सफल होते थे। वे अपने जमाने के धुरंधर भजनोपदेशक थे। उन्हें मंच के मनोविज्ञान का ज्ञान था। उनकी गहरी सूझ थी। जब चौधरी चरणसिंह (प्रधानमंत्री रहते हुए) पानीपत आए; ८० के दशक में जब जींद व नरवाना में वाजपेयी जी आए, नरवाना में चौटाला जी आए, जींद में चौधरी चरणसिंह आए, साध्वी ऋतम्भरा आईं। उनकी बड़ी रैलियाँ हुईं। उन कार्यक्रमों में लाखों लोगों के बीच उनके भजनों का कार्यक्रम होता था। आर्यसमाज के राष्ट्रीय व प्रान्तीय सम्मेलनों में उनके वक्तव्य होते थे। इतनी सामाजिक प्रतिष्ठा पाकर भी कभी अहंकार उनको छूकर भी नहीं गया। शांतिधर्मी पत्र निकलने के बाद भी उन्होंने आत्मप्रशंसा के प्रकाशन में रुचि नहीं ली। कभी किसी अवसर विशेष पर जब हमारी और संपादक मण्डल की उनके विषय में कुछ प्रकाशित करने की इच्छा होती तो वे किसी दुविधा के बिना स्पष्ट रूप से इसका निषेध कर देते थे। उनकी निःस्पृहता कागजी नहीं थी, उन्होंने इसको आत्मसात् किया था।

मंच पर व्यक्ति कुछ बोले और घर में आचरण भिन्न हो तो परिवार वालों की उस व्यक्ति को सुनने में रूचि नहीं रहती। वे जैसा मंच पर बोलते थे वैसा ही उनका आचरण था। यही कारण था कि हम परिवार के सभी सदस्यों को जैसा आकर्षण उनको सुनने में आता था वैसा और किसी को सुनने में नहीं। नगर या आसपास कोई कार्यक्रम होता तो हम

परिवार के सभी सदस्य उनको सुनने के लिए जाते थे, और आनन्दित होते थे। उनकी बीच बीच में हमारे साथ चर्चा भी होती थी, लेकिन यह उनके सिवा कोई नहीं जानता था कि वे स्टेज पर क्या बोलने वाले हैं। यह उनके प्रभाव का प्रताप है कि परिवार का छोटे से छोटा बच्चा बिना किसी प्रशिक्षण के भी बढ़िया गा लेता है।

यह हमारा जन्म-जन्मान्तरों का सौभाग्य था कि हमें ऐसे माता पिता की सन्तान के रूप में जन्म लेने का अवसर मिला। हमारे पिता का जीवन यदि यति का जीवन था तो माता का सती का जीवन है। हमारी माता ने हर संघर्ष में उनका साथ दिया और उनके संघर्ष के कारण हमें होने वाली कठिनाइयों को कभी महसूस नहीं होने दिया। और अब भी हमें राह दिखाने के लिए हमारे बीच में विराजमान हैं।

पिता का जाना किसी के लिए भी सन्तोष का विषय नहीं होता। हमारे लिए भी यह दु:खद है। पर परमात्मा की व्यवस्था सर्वोपरि है। हमारे लिए सन्तोष का विषय यह है कि वे हमें वह देकर गए हैं जो प्राय: सब पिता अपने सन्तानों को नहीं दे पाते। उनका सम्पूर्ण जीवन ही यज्ञ था। उनके विराट् यशस्वी जीवन की विरासत से बड़ी और क्या विरासत होगी! उनके जीवन में ईर्ष्या करने वाले तो मिल सकते हैं, पर उनके जीवन में कमी निकालने वाला कोई शत्रु भी नहीं मिलेगा। इस विरासत की तो कोई कीमत ही नहीं हो सकती।

हे पवित्रात्मा! आपने हम पर और समाज पर कितने उपकार किये हैं, इसकी कोई गणना नहीं हो सकती। आपका जीवन सफल और यशस्वी रहा। उसका कुछ अंश हमें प्रसाद के रूप में मिला। आपने हमें परिवार के रूप में संगठन, श्रद्धा, सेवा, पुरुषार्थ और ईश्वर विश्वास के रूप में जो पूंजी दी है, उसका कोई प्रतिदान नहीं हो सकता। आपने ईश्वरीय विद्या वेद के प्रचार के लिए नींव का पत्थर बनकर, किसी प्रतिदान की इच्छा के बिना एकनिष्ठ होकर कार्य किया है। इस ईश्वर की आज्ञापालन रूप धर्म का फल ईश्वर आपको देगा। ईश्वर की व्यवस्था के अनुरूप आप आनन्द का उपभोग करो। आपका पवित्र आचरण और जीवन आपकी अनुपस्थिति में हमारा शिक्षक है।

हम समाज के सभी वरिष्ठजनों, शुभचिन्तकों, सामाजिक संस्थाओं, समाज सेवियों, परिवार जनों का हृदय से धन्यवाद करते हैं कि आपने इस घड़ी में हमें अपना आशीर्वाद, सहयोग, सांन्त्वना देकर हमें संबल प्रदान किया। पूज्य पिताजी द्वारा संस्थापित सभी प्रचार और सेवा प्रकल्प यथावत् चलते रहेंगे। शांतिधर्मी भी आपको निरन्तर मिलता रहेगा। आपके सहयोग और आशीर्वाद की कामना के साथ-

विनीत- रमेश चन्द्र आर्य, सहदेव शास्त्री, रवीन्द्र कुमार आर्य (पुत्र)

सदा प्रेरणा देते रहेंगे हमारे पूज्य दादाजी

हमारे पूज्य दादाजी श्री चन्द्रभानु आर्य, आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक, लेखक, कवि और समाजसेवक थे। वे जितना अपने कार्य क्षेत्र को समर्पित थे उतने ही समर्पण भाव से उन्होंने अपने पारिवारिक कर्त्तव्यों को निभाया। वे हमें समय समय पर जीवन में सफलता के साथ आगे बढ़ने के गुर बताते थे। जब भी हम संध्या करने के पश्चात् उन्हें प्रणाम करते थे तो वे पूर्ण भावना के साथ हमें आशीर्वाद देते थे व हमें अच्छे कार्य करने के लिए और अधिक प्रेरित करते थे। उनके व्यक्तिगत जीवन से भी हमें अत्यधिक प्रेरणा मिलती थी कि किस प्रकार वे वृद्धावस्था में भी सुबह ३ बजे उठकर स्वाध्याय करते थे और ४:३० बजे तक शौच स्नानादि कार्यों को पूर्ण कर लेते थे। इतना अनुशासित जीवन हमें भी अनुशासन का पालन करने को प्रेरित करता था। वे हमें संध्या हवन का महत्त्व बताते थे और करने के लिए कहते थे। उनके अनुसार हवन केवल भौतिक रूप से नहीं, अपितु अन्तरात्मा से भी होना चाहिए। वे अपने भाषणों में जीवन के सत्य को जानने के लिए कहते थे और उनका कहने का ढंग इतना अच्छा होता था कि छोटा बच्चा भी उस बात को समझ सकता था। वे एक अच्छे और कुशल वक्ता के रूप में हमारे मध्य थे। परन्तु अब वे नहीं रहे- ईश्वर की व्यवस्था के कारण। वरना कौन चाहेगा कि इतना श्रेष्ठ व्यक्ति हमारे मध्य से जाए! परन्तु अब हमें उनके बताए मार्ग को अपनाना है और उनके कार्यों को और अधिक विस्तार देना है ताकि और अधिक लोगों का भला हो सके और उनकी जलाई हुई ज्योति सर्वदा जलती रहे।

-प्रतिभा आर्या (पौत्री)

चन्द्रभानु आर्य २३ दिसम्बर को महाप्रयाण कर गए

अनेक सामाजिक संस्थाओं सहित सहस्रों लोगों ने दी भावपूर्ण अन्तिम विदाई

शांतिधर्मी के संपादक, संचालक व आर्यजगत् के दिग्गज भजनोपदेशक श्री महाशय चन्द्रभानु आर्य का २३ दिसम्बर २०१४ (पौष शुक्ला द्वितीया) को रात्रि ११:३५ पर देहावसान हो गया। उनका जन्म पौष शुक्ला द्वितीया को ही सन १९३० में हुआ था। २४ दिसम्बर २०१४ को १२ बजे पूर्ण वैदिक रीति से उनका अन्त्येष्टि संस्कार पण्डित ईश्वरचन्द्र शास्त्री ने सम्पन्न करवाया।

श्रद्धेय चन्द्रभानु आर्य का निधन सब को हतप्रभ कर देने वाला था, क्योंकि वे बहुत ही सक्रिय और स्वस्थ जीवन जी रहे थे। हालांकि पिछले एक दो वर्ष से स्वाभाविक वृद्धावस्था के लक्षण प्रकट हो रहे थे। लगभग तीन मास पहले वे आटो-रिक्शा से उतरकर गिर गए थे। उनके कूल्हे की हड्डी में मामूली सा फ्रैक्चर हो गया था। इससे वे अधिक असहाय भी नहीं हुए थे। लेकिन उसके बाद शरीर की सक्रियता न रहने से शरीर की शक्तियाँ धीरे-धीरे समाप्त होने लगीं। मृत्यु से आठ दस दिन पहले तक लग रहा था कि वे ठीक हो रहे हैं। पर उसके बाद वृद्ध शरीर की शक्तियाँ धीरे-धीरे समाप्त होने लगीं, और उन्होंने शरीर छोड़ दिया।

उनके देहान्त का समाचार रात्रि को ही पूरे आर्यजगत् में प्रसरित हो गया। प्रातःकाल ही भारी संख्या में परिवारजन, परिचित और अनेक सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि अन्तिम दर्शनार्थ पहुंचने लगे। वेदप्रचार मण्डल, आर्य युवक परिषद्, आर्य वीर दल, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम, स्वर्णकार संघ, मैढ़ सुनार सभा, अनेक शिक्षण संस्थाओं, जनहित विकास परिषद्, सामाजिक सद्भावना मंच, हिन्दी साहित्य प्रेरक संस्था आदि के सदस्यों व प्रतिनिधियों और सम्मान्य नागरिकों ने उन्हें अन्तिम विदाई दी। नगर की सभी आर्यसमाजों के पदाधिकारी एवं सदस्यों, जिले की प्रायः सभी आर्य सामाजिक संस्थाओं के सदस्यगण भी अन्तिम दर्शनों के लिए पहुंचे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, हरियाणा नशाबंदी परिषद् के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के उपमंत्री प्रो० ओमकुमार जी, इण्डस शिक्षण सस्थाओं के निदेशक सुभाष श्योराण, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष ब्र० दीक्षेन्द्र आर्य, आचार्य सन्तराम आर्य, आर्यवीर दल हरियाणा के कोषाध्यक्ष करणसिंह आर्य, वेद प्रचार मण्डल के अध्यक्ष मा० रायसिंह जी, आर्य समाज जींद शहर के प्रधान अशोक गुलाटी व वरिष्ठ सदस्य मा० मोहनलाल आर्य, आर्यसमाज जींद जंक्शन के प्रधान मा० सतवीर आर्य, मंत्री मा० पृथ्वीसिंह व सभी पदाधिकारीगण, आर्यसमाज रामनगर से चौ० अभयसिंह आर्य व प्रधान करणसिंह आर्य, रघुवीरसिंह मलिक एडवोकेट, प्रिं० सुनीला मलिक, जगरूपसिंह तंवर एडवोकेट, चन्द्रभानु आर्य के शिष्य व मित्र महाशय स्वरूपलाल आर्य, शामदो, बालसखा हरिवंश वानप्रस्थी, शिष्यगण रामकुमार आर्य, रामेश्वरदत्त आर्य, गुरनाम आर्य, आद्यशिष्य स्व० महाशय मौजीराम आर्य रोहतक के सुपुत्र वेदप्रकाश व परिजन, जिलेसिंह गहल्याण, डॉ० राजपाल आर्य, पं० भीमदेव शिल्पाचार्य, सूरजमल आर्य, जिला स्वर्णकार संघ के प्रधान भारतभूषण भारद्वाज, शिवकुमार गोयल, मैढ़ सुनार सभा के प्रधान फूलसिंह वर्मा व पदाधिकारीगण, विकलांग गौशाला के प्रधान ब्रह्मप्रकाश सैनी, समाजसेवी बलदेव आहूजा, सत्यवान आर्य, गुरुकुल झज्जर के पूर्व कोषाध्यक्ष रामप्रताप आर्य, बुआना आर्यसमाज से दलवीर आर्य, अहिरका आर्य समाज से वैद्य दयाकृष्ण आर्य, मा० रत्नलाल आर्य, गढ़वाली खेड़ा, अकालगढ़ आर्य समाजों के सदस्यों, शांतिधर्मी के सम्पादक मण्डल, वैदिक प्रचार समिति के कार्यकर्त्ताओं, समस्त परिजनों, रिश्तदारों व परिचितों सहित सैंकड़ों गणमान्य व्यक्तियों ने उन्हें अश्रपूर्ण नेत्रों और भरे हुए हृदयों से भावभीनी विदाई दी। उनके अन्त्येष्टि संस्कार में संस्कारविधि के निर्देशानुसार पुष्कल घृत और सामग्री का प्रयोग किया गया। एक समय बड़ा भावुकतापूर्ण दृश्य उपस्थित हो गया, जब उनके समवय मित्र महाशय स्वरूपलाल जी फूट फूटकर रोने लगे। अनेक समाचार पत्रों और टी वी चैनलों पर उनके निधन के समाचार प्रसारित हुए।

दिवंगत श्री पं० चन्द्रभान आर्योपदेशक का संक्षिप्त जीवन परिचय

जन्म व बाल्य :

आर्यजगत् के ख्यातिप्राप्त भजनोपदेशक और शांतिधर्मी मासिक पत्रिका के संचालक व संपादक श्री पं० चन्द्रभानु आर्य का जन्म सन् १९३० में (उनके बड़े भाई स्व० श्री किशनचन्द की स्मृति के अनुसार १९२९ में) पौष शुक्ला द्वितीया को ग्राम लुहारी जिला करनाल (अब जिला पानीपत) में हुआ था। आपकी पूज्या माता जी का नाम श्रीमती मानकौर व पूज्य पिताजी का नाम श्री हरज्ञानसिंह था। वे एक ईमानदार, धर्मनिष्ठ स्वर्णकार थे। उन्होंने गाँव सिवाहा में भी व्यवसाय किया था। श्री चन्द्रभानु आर्य अपने माता पिता की दस सन्तानों में सबसे छाटे थे। आपके सबसे बड़े भाई श्री सुखलाल आर्य क्षेत्र के जाने माने पहलवान थे। वे ही सबसे पहले आर्यसमाज के सम्पर्क में आए थे और आर्यसमाज की गतिविधियों में बढ़ चढ़कर भाग लेते थे। इनका मूल गाँव पानीपत के निकटस्थ सुताना था। बड़े भाई सुखलाल आर्य का भरी जवानी में देहान्त हो गया था, अतः परिवार पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा था।

शिक्षा :

तात्कालीन परिस्थितियों के अनुसार आपने बचपन में चार जमात उर्दू की पढ़ाई की। उसके बाद आर्यसमाज द्वारा संचालित संस्कृत पाठशाला कालखा में चार वर्ष तक अध्ययन किया। कुछ समय पशु चराए, अल्हड़ पहलवानी की। स्वामी भीष्म जी के प्रचार सुन लिए थे। उन जैसा बनने की इच्छा मन में थी। गाने का शौक था। मित्रों की महफिलों में गा भी लिया करते थे। एक बार स्वामी भीष्म जी गाँव में प्रचारार्थ आए। गाँव के बुजुर्गों ने स्वामी जी से निवेदन किया- एक भजन म्हारे छोरे का भी करवा दो। स्वामी जी भजन और आवाज सुनकर प्रसन्न हुए। गांव के लोगों से उनके चालचलन के बारे में पूछा, सबने प्रसंशा की। स्वामीजी ने कहा- गुरुकुल में आ जाना। बात आई गई हुई। पश्चात् अपने मित्र श्री हरबंस सिंह (हरिवंश वानप्रस्थ) की प्रेरणा, आग्रह और सहयोग से १८ वर्ष की आयु में गुरुकुल घरौंडा चले गए। स्वामी भीष्मजी के आग्रह पर स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने वैदिक सिद्धान्तों और दर्शनों का विशेष रूप से अध्ययन कराया। स्वामीजी विशेष कृपा और स्नेह के कारण इनकी अकेले की कक्षा लेते थे। साथ-साथ स्वामी भीष्मजी अपने साथ प्रचारार्थ भी ले जाने लगे। स्वामीजी ने आपकी तीव्र बुद्धि को देखकर हर प्रकार की योग्यता बड़ी कृपा कर प्रदान की। स्व० पण्डित जी अपने गुरुओं के प्रति अत्यंत कृतज्ञ थे और अन्तिम दिनों तक अत्यंत श्रद्धा और सम्मानपूर्वक उनका स्मरण करते थे।

भजनोपदेशक :

स्वामीजी ने अपनी मण्डली बनाकर प्रचार करने की आज्ञा दे दी। २१ जनवरी १९५१ को श्री रामचन्द्र विकल (पूर्व सांसद) के आमंत्रण पर ग्राम घोड़ी, जिला बुलंदशहर में प्रथम भजनोपदेश किया। तब से लेकर मृत्यु से ३ मास पूर्व तक प्रचार किया। आपने भजनोपदेशक के रूप में बहुत प्रसिद्धि और यश प्राप्त किया। उनके अनुसार एक बार तो पूज्य स्वामीजी ने भी थपकी देकर कह दिया था- इतनी मांग तो कभी हमारी हुई थी जितनी आज तुम्हारी हो गई। आप अपने समय में शहरी क्षेत्रों में सैद्धान्तिक और ग्रामीण क्षेत्रों में सबसे सफल प्रचारक के रूप में जाने गए। वृद्धावस्था में भी छाती से भरी हुई आवाज में बोलते थे। अब भी उपदेशकों में यह उक्ति प्रचलित थी- कि चन्द्रभान जी तो ओरिजनल आदमी हैं, वे पता नहीं स्टेज पर क्या नई बात कह देंगे। प्रारम्भिक दिनों में तो ध्वनि विस्तारक की व्यवस्था भी नहीं होती थी। उनकी आवाज में ओज था, दम था। १९७० के आसपास रेवाड़ी आर्य महासम्मेलन में आयोजित भजनोपदेशक प्रतियोगिता में वे प्रथम स्थान प्राप्त कर पुरस्कृत हुए थे।

प्रचार यात्राः

उन्होंने १९५१ से १९५३ तक दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के अन्तर्गत प्रचार किया (अन्तर्गत सार्वदेशिक सभा) अधिष्ठाता श्री सेवाराम जी। १९५३ से १९५५ तक गुरुजनों की आज्ञा से गुरुकुल घरौंडा के माध्यम से प्रचार किया। १९५५ से १९५६ तक आर्यसमाज पानीपत के माध्यम से प्रचार किया और १९५६ से १९६६ तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (संयुक्त) के प्रचारक रहे। गुरुकुल कालवा के प्रारम्भिक दिनों से धन-अन्न संग्रह किया। पिछले दिनों रोहतक में एक भेंट में डॉ० सतीश प्रकाश (जो न्यू यार्क में गुरुकुल चलाते हैं) ने बताया कि पण्डित जी हम सब के लिए अन्न संग्रह कर लाते थे, और हम विद्याध्ययन करते थे। उन्होंने

बताया कि पण्डित जी कबड्डी के अच्छे खिलाड़ी थे और हम विद्यार्थियों के साथ कबड्डी खेलते थे। उनके अनुसार पण्डित जी बड़े मजेदार, हंसमुख स्वभाव के व्यक्ति थे।

हरियाणा में स्वामी इन्द्रवेश जी के आर्य राष्ट्र आन्दोलन में आपने धूमधाम से प्रचार किया और आर्य राजनीति से संबंधित भजन लिखे जो बहुत लोकप्रिय हुए। स्वामी इन्द्रवेश जी ने इनके योगदान का उल्लेख आर्यसमाज स्थापना शताब्दी स्मारिका में किया है। पण्डित जी ने आ० प्र० सभा हरयाणा के माध्यम से भी कुछ समय प्रचार किया। उसके बाद स्वामी रत्नदेव की प्रधानता में वेद प्रचार मण्डल जींद, गुरुकुल कुम्भाखेड़ा व खरल का प्रचार व अन्न संग्रह आदि कार्य किया। वेद प्रचार मण्डल जींद द्वारा संचालित आर्य भजनोपदेशक महाविद्यालय के प्राचार्य के रूप में ८ भजनोपदेशक तैयार किये। उससे पहले भी दर्जनों शिष्य कार्यक्षेत्र में थे। आर्यसमाज रामनगर, जींद के माध्यम से १ वर्ष तक ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार किया। समय समय पर गुरुकुल डिकाडला, मोर माजरा, सिंहपुरा, मटिण्डु, कुरुक्षेत्र, गौतमनगर, गदपुरी, आर्यनगर आदि के लिए प्रचार व अन्न धन संग्रह किया। हरियाणा का तो शायद ही ऐसा कोई गुरुकुल होगा जिसके लिए उन्होंने प्रचार न किया हो। पांच वर्ष तक आर्यसमाज नागौरी गेट हिसार के माध्यम से हिसार व राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार कार्य किया। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, पंजाब, दिल्ली आदि समस्त हिन्दी भाषी क्षेत्र में भी उन्होंने प्रचार की धूम मचाई। वे दो बार प्रचारार्थ नेपाल भी गए। अपने जीवन में सैंकड़ों नवीन आर्यसमाजों की स्थापना की और उनका संबंध सभा से स्थापित किया।

आन्दोलन व जेल यात्रा :

१९५७ में आर्यसमाज के प्रसिद्ध पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन में सभा के निर्देश पर करनाल और हिसार क्षेत्र में आन्दोलन का प्रचार और धन संग्रह किया। हिसार के किन्नर गांव में प्रचार करते हुए गिरफ्तारी हुई। हिसार की बोर्स्टल जेल में एक मास तक रहे। उसके बाद हरियाणा लोक समिति का भी प्रचार किया। हरियाणा शराबबन्दी आन्दोलन में भाग लिया। आर्यसमाज के नेताओं के निर्देश पर गौरक्षा आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया।

रचना कर्म :

गद्य और पद्य में आपने अप्रतिहत लिखा। हालांकि गद्य लेखन की प्रतिभा शांतिधर्मी के प्रकाशन के बाद ही सामने आई। पर उससे पूर्व पद्य लेखन में अपनी प्रतिभा के जौहर दिखा चुके थे। आपने अपनी पीढ़ी के भजनोपदेशकों में संभवतः सबसे अधिक लेखन कार्य किया है। आपने लगभग ४० भजन इतिहास (कथाएँ) व पांच हजार से अधिक फुटकर रचनाएँ लिखी हैं। आपकी पद्य रचनाओं में प्रायः सामाजिक, सांस्कृतिक सरोकार प्रतिबिम्बित होते हैं। आपकी कथाओं के विषय प्रायः राष्ट्रीयता, देशभक्ति, उच्च चरित्र, वीरता, स्वाभिमान, भ्रष्टाचार, दहेज प्रथा, नारी गौरव दर्शन आदि रहे हैं। आपकी फुटकर रचनाओं में भी देश, समाज, राजनीति, अध्यात्म, कन्याभ्रूण हत्या आदि के स्वर मुखरित हुए हैं। आप आशु कवि थे। स्टेज पर बैठे बैठे अपना बोलने का क्रम आने तक विषय के अनुसार नवीन रचना का निर्माण कर लेते थे। उन्होंने बताया था कि एक गांव में कई बार प्रचार कर चुके थे। गांव की मांग पर सात दिन प्रचार करना हुआ। दिन में नई कथा बनाता था वही रात में गाता था। वे गजब के आत्मविश्वासी कवि थे। धन की तरह उन्होंने अपनी रचनाओं को संग्रह करने का भी प्रयास नहीं किया। उनके एक शिष्य उनकी रचनाओं के संग्रह को रेलगाड़ी में भूल आए थे, जो फिर नहीं मिलीं। आद्य शिष्य महाशय मौजीराम आर्य व सहदेव समर्पित के प्रयासों से अब भी उनकी रचनाओं का विपुल संग्रह उपलब्ध है।

प्रकाशित पुस्तकें:

चन्द्र भजन भास्कर, चेतावनी, वीरांगना लीलावती, आर्यसभा की धूम, प्रकाश-स्तम्भ, बलिदान (इतिहास पं० लेखराम) राजा और रंक (कृष्ण सुदामा), चन्द्रभान का हरियाणा मेल, राव तुलाराम, भजन भास्कर (हरियाणा साहित्य अकादमी के अनुदान से प्रकाशित)

सम्पादित पुस्तकें-

गद्य : हिन्दू इतिहास : वीरों की दास्तान, स्वाभिमान का प्रतीक मेवाड़ (राजेशार्य आट्टा) योग परिचय, त्रिविध सृष्टि प्रक्रिया (हरिवंश वानप्रस्थ) विवाह की सात प्रतिज्ञाएँ (सहदेव समर्पित) वीर बालकों की कहानियाँ (सत्यसुधा शास्त्री) महर्षि दयानन्द की अमृत वर्षा (स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती)

पद्य : भीष्म भजन संग्रह (स्वामी भीष्म जी)
चेतावनी भजन (महाशय स्वरूपलाल आर्य)
कांटों में भी हंसना सीखो (सहदेव समर्पित)

अप्रकाशित रचनाएँ-

हनुमान जन्म (अंजना देवी), सरदारा बाई, वीरांगना किरणमई, राणा राज सिंह, सुन्दर बाई वीर सिंह, दलीप सिंह धाड़वी (अनुपलब्ध), शिव-पार्वती, हट्ठी-हमीर, महर्षि दयानन्द जीवन गाथा, बहन बेटियों के गीत, स्वतंत्रता की कहानी, यह भी खूब रही, महारानी किशोरी, महामाया, महारानी चतरा, नील देवी, सती मंदालसा, महाभारत (विराट

पर्व) मल्लू राम सेठ, दरोगा हट्ठी सिंह हंसा बाई, शहीदों के जीवन, जुझारसिंह आदि।

शांतिधर्मी :

सामयिक आवश्यकता को देखते हुए फरवरी १९९९ से शांतिधर्मी मासिक पत्रिका का प्रकाशन व सम्पादन शुरु किया, जो दिसम्बर २०१४ तक आपके सम्पादन से सुशोभित होती रही। इस पत्रिका से आपकी बहुमुखी प्रतिभा प्रकाश में आई। आप ने एक कुशल सम्पादक के रूप में इस पत्रिका के स्तर को बनाए रखा। आपके सम्पादन में इसको देश भर के विद्वानों, विचारकों, मनीषियों का आशीर्वाद प्राप्त हुआ और यह देश विदेश में लोकप्रिय हुई। आप द्वारा लिखित सम्पादकीय 'शांतिप्रवाह' इसका विशेष आकर्षण रहा, जो पाठकों को निरन्तर प्रेरणा देता रहा। इससे आपके प्राञ्जल भाषा के गद्य लेखन की प्रतिभा का दर्शन हुआ। समय समय पर अन्य सामयिक लेखन भी किया। आर्यसमाज के इतिहास में संभवत: किसी भजनोपदेशक द्वारा प्रकाशित यह एकमात्र पत्रिका है।

प्रमुख व्यक्तित्त्व जिनके सान्निध्य में रहे-

स्वामी रामेश्वरानन्द जी से दर्शनों का अध्ययन, स्वामी भीष्म जी से भजनोपदेश प्रशिक्षण, पं० रामचन्द्र देहलवी आर्यसमाज सीताराम बाजार में, स्वामी स्वतंत्रानन्द जी, पं० बुद्धदेव (स्वामी समर्पणानन्द जी) स्वामी ओमानन्द जी, गुरुकुल झज्जर, स्वामी सर्वानन्द जी, दयानन्द मठ दीनानगर, पं० जगदेव सिंह सिद्धान्ती, स्वामी वेदानन्द दयानन्द तीर्थ, प्रधान, स्वामी सत्यपति जी रोजड़, स्वामी सोमानन्द जी, ठाकुर अमर सिंह जी, पं० शांतिप्रकाश जी, पं० मुनीश्वरदेव जी, स्वामी दीक्षानन्द जी, महात्मा आनन्द स्वामी जी, पं० बस्तीराम जी, चौधरी पृथ्वीसिंह बेधड़क, दादा शिवनारायण, स्वामी नित्यानन्द जी, स्वामी केवलानन्द जी, स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी शक्तिवेश जी, स्वामी रत्नदेव जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, आचार्य बलदेव जी, समरसिंह वेदालंकार, पं० सत्यव्रत राजेश, कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर, चौ० श्रीचन्द जी, गुरुभाई आचार्य सत्यप्रिय जी, हिसार, पं० हरिदत्त जी, स्वामी आत्मानन्द जी यमुनानगर, महाशय कृष्ण जी, वीरेन्द्र जी; राजनेता चौधरी चरणसिंह जी, चौ० देवीलाल जी आदि। इस सूची में केवल स्मृति के आधार पर कुछ नाम दिये गए हैं। उन्होंने आर्यसमाज के समकालीन सभी विद्वानों के सान्निध्य में कार्य किया है।

पुरस्कार-सम्मान :

वे अपने प्रचार कार्य व तप के कारण समय समय पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित हुए। प्रमुख विवरण इस प्रकार है-

❐हरियाणा आर्य वीर दल द्वारा सम्मानित, ❐आर्यसमाज कंवारी, जिला हिसार द्वारा सम्मान ❐जीन्द आर्य महासम्मेलन में वेद प्रचार के ५१ वर्ष पूरे होने पर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा सम्मानित। स्वामी रामवेश जी द्वारा आयोजित आर्यमहासम्मेलनों में चार बार सम्मानित हुए। ❐अखिल भारतीय साहित्यकार कल्याण मंच द्वारा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी सम्मान, ❐हिन्दी साहित्य सम्मेलन गाजियाबाद द्वारा प्रशस्ति पत्र, ❐आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ द्वारा 'सम्पादकश्री' सम्मान, ❐स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रथम पुण्य तिथि पर सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के आयोजन में मुख्यमंत्री भूपेन्द्रसिंह हुड्डा द्वारा सम्मानित ❐ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मथुरा में 'संगीत-भास्कर' उपाधि से सम्मानित ❐हिन्दी साहित्य प्रेरक संस्था जींद द्वारा 'विमल शुभ स्मृति सम्मान' ❐अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-२०१२ दिल्ली में सम्मानित। ❐केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 'आर्य गौरव' सम्मान ❐गुगनराम एजुकेशन सोसायटी द्वारा सम्मानित। ❐विभिन्न आर्यसमाजों द्वारा सम्मानित।

देहान्त-

२३ दिसम्बर २०१४ को रात्रि ११:३५ पर। दो मास पूर्व तक पूर्ण स्वस्थ थे। अन्तिम समय तक पूर्ण चेतना में थे। मृत्युंजय मंत्र पढ़ते हुए प्राण छोड़े।

तुम आए जब जगत् में जग हंसा तुम रोये।
ऐसी करनी कर चलो, तुम हंसो जग रोये।।

आपने अपने जीवन में आने वाली सभी प्रकार की विषमताओं, जटिलताओं की उपेक्षा करके आर्यसमाज के हित में अनेक प्रकार के कष्ट उठाए हैं। आर्यसमाज के सभी सत्याग्रहों में निर्भीकता से अपना योगदान किया है। आपने नेपाल सहित भारत के दूरदराज के दुर्गम क्षेत्रों में भी किसी प्रकार की दान दक्षिणा के लालच के बिना वैदिक धर्म की दुंदुभि बजाई है। आपका सरल स्वच्छ व्यक्तित्त्व और आदर्श व्यवहार आज भी आर्यजनों के लिए अनुकरणीय है। आप सरल, तपस्वी और निष्कपट व्यक्तित्त्व के धनी थे। आपकी निर्लोभ व सात्त्विक प्रवृत्ति के लिए आप अपने सम्पर्क क्षेत्र में सम्मानित रहे हैं। अनेक शास्त्राथों में भागी रहे हैं। आप आर्यसमाज के प्रति समर्पित व एकनिष्ठ रहे हैं।

परमेश्वर हम सबको उनके आदर्शों पर चलने की शक्ति प्रदान करे।

गणमान्य व्यक्तियों ने दी श्रद्धांजली

४ जनवरी २०१४ को पूज्य स्व० चन्द्रभानु आर्य के प्रति श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया। पहले सभा का स्थान उनके निवास स्थान पर ही निश्चित किया गया था। मौसम की प्रतिकूलता के कारण यह आयोजन स्थानीय धर्मशाला में किया गया। मौसम खराब होने पर भी सैंकड़ों गणमान्य व्यक्तियों ने उनके महनीय व्यक्तित्त्व को याद किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी रामवेश जी, ब्र० दीक्षेन्द्र जी, अध्यक्ष आर्य युवक परिषद् हरियाणा, आचार्य सन्तराम, जिला वेद प्रचार मण्डल के प्रधान मा० रायसिंह आर्य, रामकुमार आर्य वेद प्रचार मण्डल हिसार, प्रिंसिपल जिले सिंह आर्य, मंत्री आर्यसमाज नागौरी गेट हिसार, इण्डस शिक्षण संस्थाओं के निदेशक सुभाष श्योराण, जगत क्रान्ति के महाप्रबन्धक अजय भाटिया, हिन्दी साहित्य प्रेरक संस्था से प्रधान रामफलसिंह खटकड़, उपप्रधान ओमप्रकाश चौहान, महासचिव नरेन्द्र अत्री, रामशरण युयुत्सु, पं० रामकुमार अलेवा, पं० रामरख भिवानी, पं० रामेश्वरदत्त, उचाना, आर्यसमाज नरवाना के मंत्री विजयकुमार आर्य, परममित्र वैदिक गुरुकुल के आचार्य व विद्यार्थीगण, सतरौल खाप के प्रवक्ता चौ० सुन्दरसिंह धर्मखेड़ी, शिवकुमार आर्य, घरौंडा, वेदप्रकाश रोहतक, राजेश आर्य आट्टा, महाशय रामधारी, यशपाल आर्य, सूबेदार धर्मसिंह महमूदपुर माजरा, मा० जसवंत आर्य, वीरेन्द्र लाठर जुलाना, मा० कपूरसिंह आर्य डाहौला, मा० दयाराम आर्य बीकानेर, रमेश आर्य काबड़ी, पं० रामेश्वरदत्त तारखा, चौ० जिलेसिंह आर्य, मा० रतनलाल आर्य, वैद्य दयाकृष्ण आर्य अहिरका, शमशेर आर्य, मा० कुलदीप आर्य गुसाईखेड़ा, दलवीर आर्य बुआना, जोरासिंह आर्य, महेन्द्रपाल शास्त्री, मा० देवराज आर्य, प्रि० अजीत गौतम, शिवप्रकाश सैनी, अश्विनी कुमार आर्य, सतबीर दहिया, रामफल दहिया सामाजिक सद्भावना मंच, वेदपाल कोथ, वेदपाल आर्य, डॉ० रवीन्द्र आर्य, बी एस गर्ग, नगरस्थ सभी आर्यसमाजों के पदाधिकारी गण- अशोक गुलाटी, मा० राजवीर आर्य, सुदेशकुमार आर्य ब्रह्मराज मैडिकल हॉल, मा० पृथ्वीसिंह, पिरथीसिंह चहल, मा० हरगोविन्द, कृष्णलाल गुप्ता, अश्विनीकुमार, विद्यासागर शास्त्री, विक्रम शास्त्री, स्त्री आर्यसमाज जींद शहर, प्रा० राजवन्ती आदि सहित सैंकड़ों गणमान्य लोगो ने श्रद्धांजली अर्पित की। सभा के प्रारम्भ में पं० ईश्वर चन्द्र शास्त्री ने हवन सम्पन्न कराया। उसके पश्चात् उन्हीं का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। उसके बाद बालिकाओं ने पं० चन्द्रभानु आर्य रचित आध्यात्मिक भजन प्रस्तुत किया। पं० रामेश्वरदत्त ने पण्डित जी द्वारा रचित आवागमन संबंधी भजन प्रस्तुत कर वातावरण में भावुकता उत्पन्न कर दी। वक्ताओं ने पण्डित जी के व्यक्तित्त्व उनके सामाजिक, पारिवारिक अवदान संबंधी अनुभव, संस्मरण सांझा किये।

श्रद्धांजली सभा से पूर्व भी विभिन्न क्षेत्रों से पधारे गणमान्य व्यक्तियों ने उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किये और परिवार को सांत्वना प्रदान की। प्रमुख रूप से गुरुकुल कालवा से स्वामी धर्मदेव, गुरुकुल खरल से आचार्या डॉ० दर्शना देवी व आचार्य दिलबाग शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के उपमंत्री प्रो० ओमकुमार आर्य, आर्यसमाज खाण्डा-खेड़ी, आर्यसमाज बुडायन, आर्य समाज खटकड़, आर्यसमाज सफीदों मण्डी, आर्यसमाज उचाना मण्डी, आर्यसमाज नरवाना, आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर, आर्यसमाज लोहारी सभी स्थानीय आर्यसमाजों, प्रायः सभी ग्रामीण आर्य समाजों के सदस्यों ने उनके अप्रत्याशित निधन पर श्रद्धांजली अर्पित की। दूरभाष व ईमेल पर भी श्रद्धांजली शोक संदेश प्राप्त हुए।

पण्डित चन्द्रभानु आर्य स्मृति साहित्य सम्मान स्थापित

पण्डित जी की स्मृति को चिरस्थाई बनाने के लिए गुगनराम सिहाग सोशल एण्ड वैल्फेयर सोसायटी, भिवानी द्वारा पं० चन्द्रभानु आर्य स्मृति साहित्य सम्मान स्थापित किया है जो विभिन्न क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रतिवर्ष दिया जायेगा। इस वर्ष समिति का सम्मान समारोह १७ फरवरी को भिवानी में श्री विनोद चन्द्र विद्यालंकार की अध्यक्षता में आयोजित हो रहा है।

-सहदेव समर्पित

श्रद्धांजली

आर्यसमाज के महाधन चन्द्रभानु आर्य के निधन से अपूरणीय क्षति

तपोनिष्ठ भजनोपदेशक, लेखक व साहित्यकार वैदिक धर्म के समर्पित प्रचारक, शांतिधर्मी के संस्थापक, संचालक व सम्पादक श्री पं० चन्द्रभानु आर्य जी के देहान्त पर देश के कोने-कोने से श्रद्धांजली संदेश/संस्मरण प्राप्त हो रहे हैं। जिन्हें हम लगातार प्रकाशित कर रहे हैं। -कार्यकारी सम्पादक

आर्यसमाज के महाधन प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० चन्द्रभानु आर्य के निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है। पं० चन्द्रभानु जी केवल भजनोपदेशक नहीं, बल्कि उच्च कोटि के कवि, समर्पित समाज सेवी, प्रतिष्ठित लेखक तथा निष्ठावान कार्यकर्ता थे। उनके जीवन में सादगी, सरलता, निश्छलता एवं उदारता आदि गुण विशेष रूप से विद्यमान थे, जिनके कारण उन्हें सदैव यश एवं कीर्ति मिली। ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्तित्व को स्मरण करने व श्रद्धांजलि अर्पित करने का सार्थक तरीका है उनके पदचिह्नों पर चलकर आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाना। अब ऐसे मिशनरी प्रचारकों एवं समर्पित आर्य भजनोपदेशकों की जरूरत है, जिसे पूरा करने के लिए हम सभी को संकल्प लेना चाहिए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दिवंगत आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि प्रस्तुत करता हूँ।

स्वामी आर्यवेश
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, ३/५, नई दिल्ली-११०००२

आर्यसमाज के प्रभावशाली भजनोपदेशक पं० चन्द्रभानु को श्रद्धांजलि देते समय ऐसा लग रहा है जैसे वैदिक धर्म प्रचार का सूर्य अस्त हो गया। हम सभी को उनकी प्रचार शैली का अनुसरण करना चाहिए और आर्यसमाज के प्रचार में अपना पूरा जीवन लगाना चाहिए।

स्वामी रामवेश
प्रधान नशाबन्दी परिषद, हरयाणा

वे आर्यसमाज की दिव्यविभूति थे।

-राममोहन राय एडवोकेट, पानीपत

सुविख्यात आर्य भजनोपदेशक एवं कवि साहित्यकार महाशय श्री चन्द्रभानु आर्य के निधन से आर्यसमाज की महती क्षति हुई है। परमात्मा परिजनों को इस दु:ख को सहन करने के लिए धैर्य व शक्ति प्रदान करे।

मूलचन्द गुप्ता, ओम प्रतिष्ठान, दिल्ली

उनके निधन से आर्यसमाज को जो हानि हुई है, उसे पूरा नहीं किया जा सकता।

प्रेम प्रकाश शर्मा दिल्ली

श्री चन्द्रभान आर्य जी के भजन बहुत प्रेरणादायक थे। बहुत अच्छे सच्चे ईमानदार आदमी थे। उनके भजन हमें सदा याद रहेंगे।

दर्शना आर्या, जींद

श्रद्धेय पं० चन्द्रभान जी जहाँ उच्चकोटि के भजनोपदेशक रहे, वहाँ वे आनेवाली पीढ़ी के प्रेरणास्रोत भी सिद्ध होंगे। उनका जीवन पूर्ण रूप से आर्यसमाज के लिए समर्पित रहा। वे कर्मठ, ईमानदार, त्यागी, तपस्वी भजनोपदेशक के रूप में सदा-सदा याद किये जाएंगे। उनके जीवन के अनुसार अनुचरणीय जीवन बनाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

मा० रायसिंह आर्य,
अध्यक्ष वेद प्रचार मण्डल, जिला जीन्द व
पूर्व प्रस्तोता आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा

चन्द्रभानु जी महर्षि के सच्चे सिपाही थे। उनके जाने से आर्यसमाज का अपूरणीय क्षति हुई है।

सुरेन्द्र आर्य हिसार

विश्वास तो किसी को भी नहीं हो रहा। एक बात मैं कहना चाहता हूँ। भले ही उनका भौतिक शरीर हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनके द्वारा आर्य समाज के लिए किया गया कार्य हमेशा प्रेरणा देता रहेगा। उस महान् कर्मयोगी के जाने से आर्यसमाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

ब्र० दीक्षेन्द्र आर्य,
अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा

आर्य जी आर्यसमाज के एक समर्पित भजनोपदेशक, कवि, समाज सुधारक व महान व्यक्तित्त्व के धनी थे। उनका

निधन आर्यसमाज के लिए बहुत बड़ी क्षति है।

धर्मपाल आर्य, हिसार

आपके पिता जी एक अद्‌भुत प्रतिभा के धनी थे, जिन्होंने अपना पूरा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार में लगा दिया। प्रचार के साथ साथ उन्होंने पारिवारिक जिम्मेवारियों को भी बखूबी निभाया। लेकिन इस संसार में जो आया है उसे एक दिन जाना है और हम सभी इस नियम में बंधे हुए हैं। उनके जाने से आपके परिवार और समाज को जो क्षति हुई है, उसे सहन करने की शक्ति भगवान आपको व परिवार को प्रदान करे। मैं आर्यवीर दल कैथल की ओर से अपनी श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ।

धर्मवीर आर्य, कैथल

उन्होंने देह का त्याग कर दिया। उनके विचार सदैव समाज के जीवन का हिस्सा बने रहेंगे। ऐसे व्यक्ति कभी मरा नहीं करते।

प्रा० अमनदीप सिंह आर्य, जींद

वैदिक मिशन के पुरोधा पं० चन्द्रभानु जी आज हमारे बीच नहीं रहे, लेकिन उनकी जलाई ज्योति हमारे दिलों में हमेशा जलती रहेगी।

अविनाश सिंह शास्त्री, गाजीपुर

पण्डित जी के देहान्त का समाचार जानकर बहुत खेद हुआ। जब मैं हिसार में था, तब उनसे मिला था। बड़े ही सरल और समर्पित व्यक्तित्त्व के धनी थे।

पण्डित विकास, जबलपुर

जिन्होंने दयानन्द को घर घर पहुंचाने का कार्य किया उनको मेरा नमन है।

आचार्य महेश वैदिक प्रवक्ता गुड़गांव

पण्डित चन्द्रभानु जी ने वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में अविस्मरणीय योगदान किया है। उन द्वारा किया गया ऐतिहासिक प्रचार कार्य हम सबको सदा प्रेरणा देता रहेगा। पण्डित जी एक उच्च कोटि के उपदेशक ही नहीं, लेखक एवं कुशल सम्पादक भी थे। यूँ तो उन्होंने बहुत ही सक्रिय, स्वस्थ दीर्घायु का उपभोग किया, जीवन को सार्थक बनाया, किन्तु उनकी कमी हमें खलती रहेगी। परमेश्वर उनकी आत्मा को शांति और सद्‌गति प्रदान करेगा। प्रभु परिवारजनों और हम सबका शक्ति देवें कि इस आघात को हम धैर्यपूर्वक सहन कर सकें और उनकी तरह सदा वैदिक धर्म की राह पर चलें, धर्मप्रचार करें।

पदाधिकारी व सदस्यगण

वेद प्रचार मण्डल, जिला जींद

शांतिधर्मी के प्रधान सम्पादक और सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक उदार हृदय तथा ईश्वर भक्त श्री चन्द्रभानु आर्य जी के निधन पर उस महान् दिव्य आत्मा की शांति हेतु गुरुकुल आर्य नगर तथा वेद प्रचार मण्डल जिला हिसार की ओर से ईश्वर से मंगल कामना करते हैं। श्री चन्द्रभानु जी एक कुशल भजनोपदेशक ही नहीं, वे सच्चे समाज सुधारक भी थे। उनका यशस्वी जीवन हम सबके लिए प्रेरणा स्रोत है। उनके कार्यों को आगे बढ़ाना ही सच्ची श्रद्धांजली है।

रामकुमार आर्य

अध्यक्ष, वेद प्रचार मण्डल जिला हिसार

हिन्दी साहित्य प्रेरक संस्था दिवंगत आत्मा की शांति की कामना करते हुए स्वर्गीय चन्द्रभानु आर्य के शोक संतप्त परिवार के लिए अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करती है कि इस दु:ख की घड़ी में ईश्वर उन्हें आत्मिक बल दे ताकि परिवार जन इस दु:ख को सहन कर सकें। श्री चन्द्रभानु आर्य का जाना केवल उनके परिवार की ही क्षति नहीं है, बल्कि पूरे साहित्य जगत् और समाज की अपूरणीय क्षति है। ऐसी महान विभूतियाँ संसार में कभी कभी अवतरित होती हैं। उनके ज्ञानालोक से आलोकित और शांतिधर्मी परिवार के प्रत्येक सदस्य का यह उत्तरदायित्त्व बनता है कि उनके दिखाए हुए रास्ते पर चलते हुए उनकी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाएँ।

हिन्दी साहित्य प्रेरक संस्था, जींद

(रामफल सिंह खटकड़-अध्यक्ष, नरेन्द्र अत्री-महासचिव)

आदरणीय श्री चन्द्रभानु आर्य जी के देहान्त का दु:खद समाचार सुनकर आर्यसमाज के अधिकारियों और सदस्यों को अति दु:ख पहुंचा है। चन्द्रभानु जी ने सारा जीवन भजन और उपदेशों के द्वारा आर्यजगत् की भरपूर सेवा की है। उनका सारा जीवन आर्यसमाज को समर्पित था। वे कर्मठता एवं कर्त्तव्यनिष्ठा की प्रतिमूर्त्ति थे। अनेक आन्दोलनों में भी उन्होंने बढ़ चढ़कर भाग लिया था। उन्होंने 'शांतिधर्मी' का बहुत सूझ-बूझ से निष्ठापूर्वक संचालन किया और उनके अथक प्रयासों से यह पत्रिका थोड़े ही समय में पूरे

देश और आर्य जगत् में प्रसिद्ध हो गई। उनके द्वारा लिखा गया सम्पादकीय लेख पाठकों को विशेष प्रेरणा देने वाला होता था। हम सब उनके आकस्मिक निधन से स्तब्ध रह गए हैं। हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि परिवार के सदस्यों को इस असहनीय दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे और चन्द्रभानु जी के आत्मा को उनके कर्मानुसार सद्गति प्रदान करे।

पदाधिकारी व सदस्यगण

आर्यसमाज, लाजपत राय चौक (नागोरी गेट) हिसार

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक और शांतिधर्मी के सम्पादक पण्डित चन्द्रभानु जी के निधन से आर्य जगत् में जो स्थान रिक्त हुआ है, उस शून्य को कभी भरा नहीं जा सकता। आर्यसमाज नरवाना के सदस्यों ने २ मिनट का मौन धारण कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किये। परमात्मा से प्रार्थना है शोकाकुल परिवार को धैर्य धारण कराये।

पदाधिकारी व सदस्यगण

आर्यसमाज नरवाना, जिला जींद

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध, ओजस्वी निष्ठावान् भजनोपदेशक और स्तरीय पत्रिका शांतिधर्मी के यशस्वी संस्थापक और सम्पादक पं० चन्द्रभानु आर्य जी का देहान्त हम सब के लिए गहन दु:ख का विषय है। स्व० पण्डित जी ने प्रचार, साहित्य-सर्जन एवं वैदिक धर्म की मान्यताओं को जन जन तक पहुंचाने का ऐतिहासिक कार्य बड़े उत्साह एवं सफलता पूर्वक सम्पन्न किया। पूरा हरियाणा ही नहीं, अन्य प्रान्त भी पण्डित जी के प्रचार से लाभान्वित हुए। परमपिता परमात्मा हम सब को सत्प्रेरणा दे कि हम स्व० पण्डित जी के पदचिह्नों पर चल सकें और उनके अधूरे कार्य को पूरा कर सकें।

पदाधिकारी व सदस्यगण

आर्यसमाज रामनगर रोहतक रोड जींद

अंधविश्वास, ढोंग, पाखण्ड के विरुद्ध अपनी रचनाओं और भजनोपदेशों के माध्यम से अलख जगाने वाले प्रसिद्ध ओजस्वी प्रचारक श्री पं० चन्द्रभानु जी के आकस्मिक निधन से आर्यसमाज को बड़ी ही क्षति हुई है, जिसको पूरा करना संभव नहीं है। परन्तु परमेश्वर की व्यवस्था ही सर्वोपरि है, उसी के अनुसार सृष्टि-क्रम चल रहा है। उनकी सेवाओं को स्मरण करते हुए आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग के उपरान्त सभी उपस्थित सदस्यों ने मौन श्रद्धांजली अर्पित की। परमेश्वर से प्रार्थना है कि हम सबको और परिवार-जनों को यह असह्य दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

पदाधिकारी व सदस्यगण

आर्यसमाज जींद शहर

आर्यसमाज रूपी संस्था को विश्व की श्रेष्ठ संस्था बनाने में जिन महापुरुषों का बलिदान व परिश्रम रहा है, जिन्होंने इसको बनाने में पूरा जीवन खपा दिया, उन्हीं महापुरुषों में से थे पण्डित चन्द्रभानु जी आर्य। उनका जीवन एक आदर्श प्रचारक का जीवन था। वे महर्षि दयानन्द की विचारधारा से पूर्णत: ओत-प्रोत थे। आर्यसमाज के भजनोपदेशकों में उनका स्थान बहुत ऊँचा है। वे स्वामी भीष्म जी के शिष्य थे। पण्डित जी आर्यसमाज के कर्मठ प्रचारक ही नहीं, वे एक आदर्श पिता, उच्च कोटि के कवि, सुयोग्य विद्वान् और बहुत ही सुलझे हुए व्यक्तित्त्व के धनी थे। उनका परिवार भी उनके पद-चिह्नों पर चलता हुआ एक आदर्श परिवार है। मैं उनको अपने परिवार व आर्यसमाज डोहानाखेड़ा की ओर से शत शत नमन करता हुआ अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

सत्यपाल आर्य, प्रधान आर्यसमाज
डोहानाखेड़ा, जिला जींद

श्री पं० चन्द्रभानु जी के देहावसान की सूचना पाकर भारी दु:ख हुआ। मैं शांतिधर्मी पत्रिका का आजीवन सदस्य हूँ। मैंने उनकी रचनाओं से बहुत प्रेरणा प्राप्त की है। महाशय श्री श्रीपाल जी द्वारा उनके महनीय व्यक्तित्त्व के बारे में जानता हूँ। पंडित जी एक ऊंचे प्रचारक और कवि थे। मैं दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति और शोकाकुल परिवार हेतु धैर्य प्रदान की प्रभु से प्रार्थना करता हूँ।

वीरेश तोमर बड़ौत
प्रदेश मंत्री, व्यापारी एसोसियेशन, प० उत्तर प्रदेश

परिवर्तिनि संसारे मृत: को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंश: समुन्नतिम्।।

इस परिवर्तनशील संसार में प्रतिदिन लोग जन्मते और मरते रहते हैं। प्राय: करके ऐसे लोगों के जन्म और मृत्यु से संसार में कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता। परन्तु जो व्यक्ति स्वार्थरहित होकर जनकल्याण की भावना से अपना सर्वस्व लगाकर जगत् का उपकार करता है, वास्तव में उसी का जन्म लेना सार्थक है। वह स्वयं तो प्रसिद्ध होता है साथ

ही अपने कुल की प्रतिष्ठा में वृद्धि करता है। ऐसे व्यक्ति का जन्म लेना सार्थक माना जाता है।

इस कोटि के व्यक्तियों में स्व० श्री चन्द्रभानु आर्य, उनकी सहधर्मिणी, पुत्र, पुत्रियों एवं परिवार की गणना जा सकती है। आर्य जी छोटी सी उम्र से ही समाज में फैली कुरीतियों, पाखण्ड और रूढ़ियों के जाल को तोड़ने में आयु पर्यन्त लगे रहे। आर्य जी महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी थे। वे एक कर्मठ आर्य कार्यकर्ता, कवि, उपदेशक एवं साहित्यकार थे। उन्होंने जीवन भर अपनी रचनाओं के माध्यम से उत्तर भारत में जनजागृति का काम करके महर्षि दयानन्द के मिशन को बखूबी आगे बढ़ाया। उन्होंने अपने जीवन-काल में क्षेत्र के काफी लोगों को उपदेशक/भजनोपदेशक के रूप में स्थापित किया जो आज भी आर्य जगत् की सेवा कर रहे हैं।

स्व० श्री चन्द्रभानु जी का आर्यसमाज बीकानेर-गंगायचा अहीर (रेवाड़ी) के संस्थापक स्व० महाशय हीरालाल जी आर्य से विशेष लगाव रहा। प्रायः आर्य जी वार्षिक उत्सव पर आते रहते थे और अपने भजनोपदेशों के द्वारा श्रोताओं को धार्मिक एवं सामाजिक रूप से लाभान्वित करते थे। आर्य समाज बीकानेर-गगांयचा अहीर २१ फरवरी को प्रत्येक वर्ष महाशय हीरालाल जी का स्मृति दिवस मनाया करती थी। एक वर्ष कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में श्री चन्द्रभानु जी ने हमें कहा कि 'भई, महाशय जी के स्मृति दिवस की बजाय आप लोग उनका जन्म-दिन मनाया करो'। उसके पश्चात् हमने १५ जनवरी को हर वर्ष महाशय हीरालाल जी का जन्म दिन मनाना शुरू कर दिया।

विगत १६ वर्षों से श्री चन्द्रभानु जी आर्य कुशलता पूर्वक अपनी मासिक पत्रिका 'शांतिधर्मी' का सम्पादन करते रहे और पत्रिका के माध्यम से पूरे क्षेत्र में वैदिक ज्ञान का प्रवाह करते रहे। आशा है अब उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी इस कार्य को बखूबी आगे बढ़ाते हुए 'चन्द्र' कीर्तिगान में चार चाँद लगा देंगे तथा 'भानु' की चमक-दमक कभी कम नहीं होने देंगे।

हजारों साल नरगिस अपनी बे नूरी पे रोती है।
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।।

प्रो० धर्मवीर आर्य नम्बरदार, संरक्षक आर्यसमाज
बीकानेर-गंगायचा अहीर, रेवाड़ी

पण्डित श्री चन्द्रभानु जी आर्य उन यशस्वी पुरुषों की श्रेणी में आते हैं जो दृढ़ संकल्प के धनी होते हैं। श्री चन्द्रभानु आर्य जी से मेरा सम्पर्क वर्ष १९८० में हुआ था। तब से निरन्तर आत्मीयता बढ़ती रही, उनके अनुभव, उनके ज्ञानकोष का लाभ मिलता रहा। वे महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम भक्त, आर्यसमाज के सच्चे सेवक, निर्भीक एवं कुशल भजनोपदेशक, प्रखर विद्वान्, सफल सम्पादक, विनोदप्रिय, स्वाध्यायशील, विनम्र व्यक्तित्त्व के धनी थे। उनके निधन से आर्य जगत् में शोक की लहर दौड़ गई है। आर्यजगत् को अपूरणीय क्षति हुई है। इस तरह का व्यक्तित्त्व देश व समाज की धरोहर होता है।

उन्होंने आर्यसमाज का प्रचार मिशनरी भाव से किया। एक बार वे प्रचार के लिए हमारे गांव डूमरखां कलां आए हुए थे। रात्रि के प्रचार के दौरान शरारती तत्त्वों ने ईंटें बरसानी शुरु कर दीं। एक ईंट उनके पास ढोलक पर भी पड़ी। इस पर पण्डित श्री चन्द्रभानु जी आर्य शेर की तरह दहाड़ उठे और उन्हें चुनौती देते हुए बोले कि आज हमारे प्रचार का आखिरी दिन था। परन्तु अब तीन दिन यहीं प्रचार करुँगा। किसी में हिम्मत है तो रोक के दिखाए। इसके बाद उन्होंने तीन दिन वहीं प्रचार किया। यह उनके व्यक्तित्त्व का ही कमाल था कि ईंटें बरसाने वाले ने उनके चरण स्पर्श कर माफी माँगी।

शांतिधर्मी पत्रिका के सम्पादकीय 'शांतिप्रवाह' के माध्यम से उनके विचार जन जन तक फैले हैं। उनके लिखे भजन, गीत, रोचक किस्से अनेक गायकों, भजन मण्डलियों द्वारा गाए जा रहे हैं, सराहे जा रहे हैं। ऐसे प्रखर व्यक्तित्त्व का चले जाना एक रिक्तता पैदा करता है। परन्तु विधि के विधान को कौन टाल सकता है? भगवान उन्हें मोक्ष प्रदान करे, अपने चरणों में स्थान दे। पण्डित श्री चन्द्रभानु जी का भरा-पूरा समृद्ध परिवार है, प्रभु उन्हें धैर्य दे, शक्ति दे।

धर्मवीर आर्य, (खण्ड मौलिक शिक्षा अधिकारी)
३२८०, अर्बन इस्टेट, जींद

श्री चन्द्रभान आर्य जीवन भर याद रहेंगे। मेरे जीवन में साहस व निडरता चन्द्रभान आर्य की देन है।

मुझे याद दिलाती है मेरी माँ--कि जब मैं चार साल का था तो चन्द्रभान आर्य के भजन सुनने के लिए रात को अंधेरे में अकेला चला गया था। प्रचार होता रहा मैं सुनता रहा। मेरी माता जी व दादी जी ने देखा तो मैं बिस्तर पर नहीं था। जब पूरा प्रचार सुनकर मैं आया तो उन्होंने कहा- 'तुझे डर नहीं लगा?' मैंने कहा- 'नहीं, भजनी तो कह रहे थे कि आदमी को कभी डरना नहीं चाहिए और साहस से काम लेना चाहिए।'

आज तक जो कार्य मैं साहस और निडरता से करता

हूँ वह आदरणीय श्री चन्द्रभान आर्य की देन है। वे मेरे जीवन भर प्रेरणास्रोत बने रहेंगे। मैं उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ। आत्मा की शांति की कामना करता हूँ।

केवल सिंह जुलानी,
संयोजक जनहित विकास परिषद्, हरियाणा।

मान्य गुरुभाई चन्द्रभानु जी के दु:खद निधन समाचार को पाकर भारी आघात लगा। क्या किया जावे? प्रभु की व्यवस्था को हर दशा में स्वीकार करना पड़ता है।

भ्राताश्री पुरानी पीढ़ी के एक आदर्श महोपदेशक एवं विख्यात कवि थे। उनकी रचनायें आर्य मंचों पर गुंजायमान होती रहती हैं। मैं भी उनके कई गीतों को यथा 'ठगी चोरी छोड़ दिये' और 'गांधी ने कहं लई आजादी' को प्राय: गाता रहता हूँ। गुरु भाई होने के नाते आप हमें बड़ा प्यार करते थे। हमारा और उनका ३०-३५ वर्षों से ये सम्बन्ध था। मुझे खेद है कि मैं बहुत कम आपके सम्पर्क में रह पाया। मैंने सर्वप्रथम काठमंडी सोनीपत आर्य महोत्सव पर आपसे भेंट कर जब उन्हें बताया कि मैं आपका गुरुभाई हूँ तो आपने मुझे गले से लगाया था।

मेरा दुर्भाग्य है कि मैं आपसे दूर ही रहता रहा, अन्यथा मैं आपसे संगीत शिक्षण, प्रशिक्षण पा अपने को ऊंचा उठता सकता था। आपने एक लम्बे समय तक देव दयानन्द के मिशन की भारी निष्ठा से सच्ची सेवा की। अनेक संस्थाओं ने आपको सम्मानित किया। हरियाणा साहित्य अकादमी ने भी आपकी प्रख्यात रचनाओं को प्रकाशित कर प्रशंसनीय कार्य किया है। मैं दिवंगत पुण्यात्मा को अपनी श्रद्धांजलि प्रेषित कर रहा हूँ।

श्रीपाल आर्योपदेशक वैदिक मिशनरी
खेड़ा हटाना, बागपत

श्रद्धेय पं० श्री गुरुवर श्री चन्द्रभानु जी भजनोपदेशक आर्य का निधन हमारे समाज और जनता के लिए बहुत बड़ा दु:ख है और और उनकी कमी महसूस होती रहेगी। श्री चन्द्रभानु जी बहुत उच्चकोटि कवि ही नहीं थे बल्कि एक बहुत बड़े सुधारक और विद्वान थे। मैंने उनके साथ रहकर बहुत कुछ सीखा है, पाया है। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि श्री चन्द्रभानु जी की आत्मा को शांति प्रदान करे, और हमें इतना सामर्थ्य प्रदान करे कि हम आजीवन उनके बताए रास्ते पर चलते रहें।

पं० रामेश्वर आर्योपदेशक तारखा,
उचाना मण्डी, जीन्द

महाशय श्री चन्द्रभान जी आर्य ऐसे प्रचारक थे जो किसी प्रकार की परिस्थिति से घबराते नहीं थे। अपना खानदानी कार्य करते तो करोड़ों रुपए कमा सकते थे मगर उसका ध्यान नहीं किया। उनके मन में, तन में, जीवन में रात और दिन आर्यसमाज बसा हुआ था। उनकी वाणी में बहुत ओज था। वह गरजते थे। बिना माइक के भी माइक जैसी आवाज थी और महर्षि दयानन्द के प्रति समर्पित थे। ऋषि सिद्धान्तों से ओत-प्रोत थे। कभी निराश नहीं होते थे। उनके गीतों को सुनकर या पढ़कर ऐसा लगता था कि वह बहुत सूक्ष्म ज्ञान में सिद्धहस्त हैं। ऐसे महाशय चन्द्रभानु जी को बार-बार श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

महाशय रामरख आर्य, भजनोपदेशक भिवानी

पं० चन्द्रभानु जी आर्य के देहावसान से आर्य जगत् की अपूरणनीय क्षति हुई है। उनका स्थान भरना शायद कठिन सा है। ऋषि दयानन्द के अमर भक्तों, भजनोपदेशकों में जब गणना होगी तो अग्रगण्य होंगे। उनकी आत्मा की सद्गति शान्ति की अविरल प्रार्थनाएं व जन्मोत्सव सभाओं में निरन्तर स्मरण किया जाता रहेगा। उनके जन्मोत्सव को ही मनाया जाएगा।

विद्यासागर शास्त्री, कृष्णा कालोनी, जीन्द

श्री चन्द्रभान जी आर्य को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं प्रभु उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे। आप एक सच्चे आर्य वैदिक धर्म प्रचारक, राष्ट्र भक्त एवं समाज सुधारक थे। आपने अपने अथक परिश्रम से राष्ट्र एवं समाज की सेवा करते हुए जीवन के लक्ष्य को प्राप्त किया।

देवराज आर्य, जसवन्त आर्य, वीरेन्द्र आर्य, जुलाना

श्री चन्द्रभान जी आर्य के पास मैं जब भी जाता था मुझे जो आनन्द मिलता था, उस अनुभूति को मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। परमात्मा उन्हें अपने चरणों में स्थान दे। ओ३म शांति।

शिव प्रकाश सैनी, जींद

मेरी परमात्मा से प्रार्थना है कि उनको जल्द ही नये शरीर के साथ हमारे बीच भेजे क्योंकि आज उनकी पहले से भी ज्यादा ज़रूरत है समाज को

बिजेन्द्र आर्य, कैराना उ० प्र०

दिनकर अस्त हुआ वाणी का

दिनकर अस्त हुआ वाणी का, ओज और हुंकार सो गया।
शांतिप्रवाह को जाग्रत करने वाला वह श्रृंगार खो गया।।

गौरवमय अतीत का गायक, आज हमारे बीच नहीं है।
शोणित में उबाल जगा दे, ऐसा अग्नि-गीत नहीं है।।
वाणी-वीणा को झंकृत करने वाला वह तार सो गया।।

अनल राग की गीत-वाटिका, उजड़ गई गायक को खोकर,
रिक्त पड़ा तीरों का तरकस, अपने प्रिय शायक को खोकर।।
कैसे बजे वीणा अब बोलो! उसका तो हर तार सो गया।।

शांतिधर्मी के माध्यम से करते अग्नि-सोम की वर्षा।
चन्द्रभानु के गुण पाकर रसना बने शीघ्र ही सरसा।।
होकर समर्पित सहदेव का आर्य सारा परिवार हो गया।।

-राजेशार्य आट्टा

वे जौहरी थे।

मुझे पढ़ने-लिखने का शौक छोटी उम्र से ही था जब मैं दसवीं कक्षा में था, उसी समय मेरी छुटपुट रचनाएँ दैनिक ट्रिब्यून, मधुर लोक, परोपकारी, सर्व हितकारी, सुधारक आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होनी शुरू हो गई थी। पं० चन्द्रभानु आर्य जी ने मुझे शांतिधर्मी पत्रिका का एक अंक भेजा, मैंने पत्रिका आने पर मेरी एक रचना शांतिधर्मी में प्रकाशन के लिए भेजी। पं० जी ने मेरी रचना प्रकाशित कर मुझे पत्रिका का वह अंक भेजा, जब पत्रिका का अंक मुझे मिला तो मैंने पं० जी को धन्यवाद करने के लिए फोन किया। मैं ने अपना परिचय देते हुए भिवानी ही कहा था कि उन्होंने मुझे कहा, सह-सम्पादक जी नमस्ते। मैं एकदम से झेंप गया और कहा कि मैं किसी पत्र-पत्रिका का सह सम्पादक नहीं हूँ। पं० जी ने जवाब दिया- आप शान्तिधर्मी के सह-सम्पादक हैं। मैंने आपकी रचना जिस अंक में प्रकाशित की है, उसी अंक से आपको पत्रिका का सह-सम्पादक नियुक्त कर दिया है। तब मैंने कहा कि मैं अभी इस योग्य नहीं हूँ। अभी बी० ए० में ही पढ़ रहा हूँ उम्र भी छोटी है, कोई विशेष ज्ञान भी नहीं है। तब तक मैं व पं० जी व्यक्तिगत रूप से एक दूसरे को जानते भी नहीं थे। तब पं० जी ने कहा- मैं वैदिक प्रचारक, भजनोपदेशक व सम्पादक के अलावा जौहरी भी हूँ। हीरे की परख जानता हूँ। आप स्वाध्याय करो और खूब लिखो। फिर बताना मैंने तुम्हें गलत चुना कि सही?

उसके बाद तो मैं लगातार उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करता रहा। उनके व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व से परिचित होता रहा। पं० जी के स्वर्गवास से कुछ दिन पहले मैं उनसे मिलने आया था तब उन्होंने बातों-बातों में मुझ से पूछा, वकील साहब! अब बताईये, मैनें आपको गलत चुना था कि सही, तुम सच में हीरे हो। आज तुम्हारा आर्य जगत् व हिन्दी साहित्यकारों में सम्मान है। मैंने कहा- पं० जी, आपके आशीर्वाद से ही मान-सम्मान है। तब पं० जी ने कहा कि यह सब तुम्हारी मेहनत और पुरुषार्थ का परिणाम है। मैंनें तो केवल जौहरी हूं, हीरे की परख जानता था उसकी परख की थी। पं० जी सच में एक जौहरी थे। उन्होंने न जाने मेरे जैसे कितने लोगों को तराश कर हीरा बना दिया जिसका आर्य समाज सदा ऋणी रहेगा और मैं भी।

नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट भिवानी

गुरु कहें या पिता तुमको,

श्रद्धा से झुकता है माथा, तुम्हें हर बार पण्डित जी।
भुलाया जा नहीं सकता, तेरा वह प्यार पण्डित जी।।

लगन दिल में परमार्थ की, काम सब भूले दुनिया के,
गुरु कहें या पिता तुमको, तेरा परिवार पण्डित जी।।

धन्य होगी वह माता भी जन्म पुत्र को देकर के,
नमन करें ऐसी नगरी को सभी नरनार पण्डित जी।।

अपनापन जो देखा था तेरे व्यवहार में निशदिन,
दिलों को जीत लेते थे, ऐसे दिलदार पण्डित जी।।

अनेकों उपदेशक देखें हैं इसी जीवन में ही हमने,
प्रभु ने कैसे भेजे थे अजब अवतार पण्डित जी।।

गुरु भीष्म से दीक्षा ली, लगी प्रचार की धुन थी,
गरजते शेर की भाँति थे ऐसे दमदार पण्डित जी।।

रहेगा नाम ये रौशन झुकाएँगे सभी माथा,
वे चन्द्रभानु जी ही थे, रूप अवतार पण्डित जी।।

सुनाएँ गौरव गुण गाथा तेरे महके से जीवन की,
आनन्दित करता तन-मन को तेरा दीदार पण्डित जी

है सच्ची श्रद्धांजली उनको करें हम आचरण सुन्दर,
रमेश हैं भक्त कहलाने के तभी हकदार पण्डित जी।।

रमेश आर्य,
ग्रा० पो० काबड़ी, जिला पानीपत

आदरणीय पण्डित चन्द्रभानुजी आर्यसमाज की निधि थे। 'स जातो येन जातेन याति वंश: समुन्नतिम्' परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि शोकाकुल परिवार को धैर्य व दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी

हम आपके योगदान को कभी नहीं भूल सकते। आपने जो कार्य समाज की उन्नति के लिये किये वो सराहनीय हैं। आपके जाने से आर्य जगत् को बहुत ही क्षति हुई है, लेकिन आप हमारे दिलों में सदा विराजमान रहेंगे। भगवान आपकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

चौधरी देवव्रत आर्य, बड़ौत

२४ दिसम्बर को प्रात: काल की बेला में यह समाचार सुनकर अत्यंत दु:ख हुआ कि आर्यजगत् के उच्च कोटि के विद्वान् भजनोपदेशक पं० चन्द्रभानु जी का देहावसान हो गया। वर्ष १९७५ में मैं जब दसवीं कक्षा में पढ़ता था, तब आर्यसमाज मन्दिर जींद में पण्डित जी से परिचय हुआ। परीक्षा उपरांत मैं माननीय रामधारी शास्त्री व वेदपाल भ्राता जी के साथ आर्यसमाज में ही रहकर पढ़ने लगा। पण्डित जी जब भी प्रचारार्थ आते थे तो अक्सर वे आर्यसमाज में ही रुकते थे, मैं उनकी सेवा करता और भोजन बनाता था। मुझे पण्डित जी वैदिक उपदेश करते थे और बहुत स्नेह रखते थे। अनेक बार मैं पण्डित जी को प्रचार के लिए अपने गाँव ले गया। पण्डित जी ने आसपास भी बहुत प्रचार किया। इनके प्रचार व उपदेश से हमारे अत्यंत गरीब परिवार में भी खुशहाली आई। मैं जीवन भर के लिए आर्यसमाज का कार्यकर्त्ता बन गया। अब लगभग ४० वर्ष हो गए वैदिक रास्ते पर बड़ा आनन्द आ रहा है।

पण्डित जी वैदिक धर्म के प्रामाणिक विद्वान्, मनीषी व ओजस्वी वक्ता थे। आदर्श जीवन, उच्च चरित्र व पवित्र व्यवहार की झलक उनके जीवन में दूर से ही दिखाई देती थी। गरीब के हितैषी, अन्याय के विरोधी थे। रामनिवास आर्य, रामकुमार आर्य, रामेश्वर आर्य जैसे अनेक भजनो पदेशक तैयार किये जो आज भी वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं। आर्यसमाज की अनेक सभा व संस्थाओं ने आपको अनेक पदकों व सम्मानों से बड़े-बड़े समारोहों में सम्मानित किया है। आपके जीवन की ज्योति व सुगन्धि सदैव वैदिक वातावरण को आलोकित करती रहेगी। शत शत नमन

समर्पित-योगाचार्य **डॉ० सूर्यदेव आर्य,**
कृष्णा कालोनी, जींद

हम पण्डित चन्द्रभानु जी को पिछले ३५ वर्षों से व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक दृष्टि से जानते ही नहीं, बल्कि समझते भी हैं। जब हम करीब सात आठ वर्ष के बच्चे थे, तब पण्डित जी हमारे गांव रधाना में भजनोपदेश करने आते थे। हम उनके भजनोपदेश सुनकर बड़े हुए। उनके उपदेशों से हम ही नहीं, बल्कि लाखों लोग नशे, मूर्ति पूजा, धर्म के नाम पर पाखण्ड, जातिवाद, छुआछात, साम्प्रदायिकता, दहेज प्रथा जैसी अनेक सामाजिक बुराईयों से बचे रहे। उनके विचारों से प्रेरित होकर विशेषकर हरियाणा में शराब बन्दी आन्दोलन, दहेज विरोधी व अन्य समाज सुधार आन्दोलन चलाए गए व चलाए जा रहे हैं। धर्म के नाम पर पाखण्ड चलाने वाले बाबाओं के खिलाफ तो चन्द्रभानु आर्य अन्तिम क्षणों में भी लिखते रहे। धर्म के नाम पर व्यापार करने वाले लोगों को पण्डित जी शास्त्रार्थ के लिए चुनौती भी देते रहे थे। उनका अन्तिम सांस भी समाज विकास की धारा में कार्य करता रहा। हमने सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक योद्धा को खो दिया है। ऐसे विरले ही महापुरुष होते हैं जो समाज के सही दिशा देने वाले तथा संस्कृतिकर्मी होते हैं। उनके कार्यों को आगे बढ़ाना ही सच्ची श्रद्धांजली है। उनके कार्यों को आगे बढ़ाने में हम उनके द्वारा रचित शांतिधर्मी परिवार के साथ हैं।

रामफल दहिया (सामाजिक सद्भावना मंच),
जयप्रकाश दहिया, सतबीर दहिया (दहिया परिवार)

पण्डितजी के निधन का समाचार सुनकर हम सभी आर्य परिचितों को बड़ा दु:ख हुआ। स्व० चन्द्रभानु जी गुरुकुल घरौंडा में पढ़े, जिससे उन पर स्वामी रामेश्वरानन्द जी और स्वामी भीष्म जी की विशेष कृपा दृष्टि रही। स्वामीजी उनकी बुद्धि और शारीरिक योग्यता को देखकर उन्हें गुरुकुल घरौंडा का कार्यभार सौंपने का मन बना रहे थे, पण्डित जी का मन भी गृहस्थ से अलग रहकर समाज सेवा करने का था। पर घर के बुजुर्गों ने इसे स्वीकार नहीं किया। फिर भी स्वामी जी ने स्वामी भीष्म जी से यह प्रार्थना की कि इन्हें संगीत विद्या के माध्यम से आर्यसमाज का अच्छा भजनोपदेशक तैयार करो। स्वामी भीष्म जी ने चन्द्रभानु जी को वैसा ही कर्मठ उपदेशक बना दिया। पण्डित जी ने १९५७ में हिन्दी आन्दोलन के लिए गांव गांव जाकर प्रचार के माध्यम से हिन्दी आन्दोलन के लिए आन्दोलनकारी तैयार किये, जिससे बड़ा जबरदस्त आन्दोलन चला। पंजाब सरकार को अंबाला मण्डल से पंजाबी की अनिवार्यता को वापस लेना पड़ा। १९६२ में फिर हरियाणा लोक संघर्ष

समिति के लिए प्रचार प्रसार किया, जिससे तत्कालीन मुख्यमंत्री सरदार प्रतापसिंह कैरों भी घबरा गया, और उसी संघर्ष के कारण १९६६ में नए प्रांत हरयाणा का जन्म हुआ। स्व० चन्द्रभानु जी आर्य बहुत थोड़ी उमर में यानि बीस वर्ष की आयु में बड़े अच्छे आर्य उपदेशक बन गए थे। १९५५ में उन्होंने डी ए वी हाई स्कूल सांघी में तीन दिन बड़े भारी जोश के साथ प्रचार किया। उसके बाद भी ग्रामीण आप को सुनने के लिए बुलाते रहते थे। आप हर समय इसके लिए तैयार रहते थे। आपने १९७८ तक ग्राम में रहते हुए प्रचार का डंका बजाया। १९७९ में आपने अपना निवास जींद में कर लिया आपने बहुत आर्यसमाजों का गठन किया जिसके लिए आज तक आपकी चर्चा होती है। आपके त्याग तप और परिश्रम का फल आपके परिवार में भी देखने को मिलता है आपके तीन पुत्र और २ पुत्रियाँ प्रतिदिन घर पर यज्ञ करते हैं और गाय की सेवा करते हैं।

आपने अपने अथक परिश्रम से शांतिधर्मी मासिक पत्रिका के माध्यम से सामाजिकों को अनूठा साहित्य भेजना शुरु किया। इस पत्रिका का आपके द्वारा लिखा गया सम्पादकीय लेख जब हम पढ़ते हैं, तब हम महसूस करते हैं कि महाशय जी कितनी लगन और श्रद्धा के विद्वान हैं। जब समय अनुसार समाज को अपने विचारों के माध्यम से सचेत करते रहते हैं। आप जैसे संघर्षशील महापुरुष के हमारे बीच से चले जाने से समाज को अधिक हानि हुई है, क्योंकि आपने अपना पूरा जीवन ही समाज को समर्पित कर रखा था। मेरी परिजनों से प्रार्थना है कि उनकी स्मृति में एक त्रिवेणी किसी स्कूल या सार्वजनिक स्थान पर अवश्य लगवाएँ। मेरी परिवार और आर्यजनों की ओर से प्रभु से प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें और उनकी मृत्यु के पश्चात् इस परिवार और समाज को जो दुःख हुआ है, उसे सहन करने की शक्ति दें।

भलेराम आर्य, सांघी वाले

पंडित चन्द्रभान जी आर्य : मेरे प्रेरणास्त्रोत्र

आर्यसमाज के स्वर्णिम युग के प्रचारक, महात्मा, त्यागी, तपस्वी, सिद्धान्तनिष्ठ पंडित चन्द्रभान जी महाराज का देहांत आर्यसमाज के साथ-साथ मेरी भी व्यक्तिगत क्षति है। आपके प्रेरणादायक जीवन से मैंने अनेक बार प्रेरणा रूपी आशीर्वाद ग्रहण किया। मैं जब भी उनसे मिलता था आपसे पुराने संस्मरण पूछता था। स्वामी भीष्मजी महाराज, स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज, स्वामी सर्वपणानन्द, स्वामी मुनीश्वरानन्द, स्वामी सर्वदानंद, स्वामी आत्मानंद, स्वामी ओमानंद, स्वामी इंद्रवेश, पंडित रामचन्द्र देहलवी, पंडित बुद्धदेव मीरपुरी, कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर जैसे अनेक दिग्गजों के संस्मरण सुनने का पुण्य लाभ मुझे आपसे मिला। आपने सर्वपूर्ण जीवन अत्यंत कठिनाई से जिया, धन की ओर सदा बेरुखी रखी, जिसके चलते आपने अपने परिवार को भी कठिनाई में रखा। मुझे याद है आप जो दक्षिणा आर्यसमाज में प्रचार से लाते थे उससे बच्चों को सुविधा देने के स्थान पर आर्यसमाज के सिद्धांतों का प्रचार करने के लिए साहित्य छपवा कर मुफ्त बाँटते थे। मुझे याद है आप कैसे साइकिल के पीछे हारमोनियम बांध कर जेठ की दोपहरी में प्रचार के लिए दयानंद के सच्चे सिपाही के समान घूमा करते थे। मुझे याद है कि आपकी अंतिम इच्छा मंच से प्रचार करते हुए शरीर छोड़ने की थी। मगर आपके मन में एक टीस थी कि आर्यसमाज अपने प्रचारकों को बूढ़े बैल के समान वृद्ध होने पर छोड़ देता है। आपका कहना था कि स्वामी समर्पणानन्द जी की इच्छा पर ध्यान दिया जाता कि आर्यसमाज के प्रचारकों को भी कम से कम प्राथमिक अध्यापकों के समान मासिक मिलना चाहिए और वृद्ध होने पर पेंशन दी जाती तो आर्यसमाज में प्रचारकों की इतनी कमी कभी न होती। पंडित रामचन्द्र देहलवी जी का एक संस्मरण आज भी मुझे याद है जो अपने मुझे बताया था। एक बार आर्यसमाज सीताराम बाजार में देहलवी जी रुके हुए थे। देहलवी जी भी आपके समान स्वर्णकार कुल से थे। देहवली जी ने पूछा कि कहाँ जा रहे हो। अपने बताया कि स्वर्णकार समाज ने प्रचार के लिए बुलाया है। देहलवी जी ने कहा कि जातिवादी पंचायतों में जाने से परहेज करो क्योंकि इससे हमारी सोच में प्रगति के स्थान पर जातिवाद की भावना दृढ़ होती है। आपने जीवन भर देहलवी जी कि आज्ञा का पालन किया। मैं आपसे कई बार विनती करता था कि आप अपने संस्मरण लिख क्यों नहीं देते। पर आप कोई प्रतिक्रिया न देकर मौन धारण कर लेते। आज मैं उस मौन का सन्देश समझ पाया हूँ। आर्यसमाज को जो वर्ण समाज के रूप में आप देखना चाहते थे, जहाँ पर गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार व्यक्ति की महत्ता होती, वही समाज आपकी आँखों के सामने जाति की पंचायतों का अखाड़ा बनता जा रहा था। आपने जीवन भर स्वामी दयानंद के जिस सन्देश का प्रचार किया, अंत में आप आर्य कहलाने वाले लोगों को उसी जातिवाद में ग्रसित

देखकर अंदर से व्यथित हो जाते थे। पंडित जी गुणों से वैदिक ब्राह्मण थे, जिन्होंने अनेकों के जीवन को प्रभावित किया, जिसमें से मैं भी एक हूँ। आशा है पाठक उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को भी स्वामी दयानंद की शिक्षाओं के समान बनाने का प्रयत्न करेंगे। ईश्वर से हमारी यही प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति दे।

डॉ. विवेक आर्य drvivekarya@yahoo.com

नींव का पत्थर : चन्द्रभानु आर्य भजनोपदेशक

राष्ट्रीय एकता तथा नवजागरण के लिए अहम् भूमिका निभाने वाले, पूर्व निद्रित आर्यों को जगाने वाले वे कौन थे जो निर्भय निस्वार्थ भाव से राष्ट्र के निर्माण में, पाखण्ड अंधविश्वास को दूर करने में, ईश्वरीय ज्ञान वेद का प्रचार करने में, संसार का उपकार करने में, ईश्वर के सच्चे स्वरूप को बताने में, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शिक्षा का प्रकाश फैलाने का प्रचार करने में जुटे रहे। इतिहास के किसी भूले भटके पन्ने पर ही उनका नाम मिलता है। जब कोई नहीं था तो वे थे। इन्हीं लोगों में चन्द्रभानु आर्य भजनोपदेशक का नाम सर्वोपरि है। वास्तव में वे नींव के पत्थर थे, जिन्होंने भोग विलास को ठुकराकर, भूखे प्यासे रहकर आर्यसमाज के दीवाने बनकर,यातायात के साधनों के अभाव में पैदल चलकर अपने उभरते हुए यौवन को राष्ट्र-निर्माण एवं कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के लिए कुर्बान कर दिया। वे अपने खून पसीने से, अपने कष्टपूर्ण जीवन से, कठोर मेहनत और पुरुषार्थ से अपना बलिदान देकर, ऋषि के मिशन को अपना मिशन समझकर आर्यसमाज के भवनों का निर्माण कर गए, उस शृंखला में महाशय चन्द्रभानु आर्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे आर्यसमाज की नींव के पत्थर थे।

महाशय चन्द्रभानु जहाँ समाज सुधारक उपदेशक थे, वहाँ सुलझे हुए सफल पत्रकार भी थे। शांतिधर्मी के पचासवें अंक के लोकार्पण समारोह में उनके आमंत्रण पर मैं भी सम्मिलित हुआ था। उन्होंने शांतिधर्मी के एक अंक में आर्यसमाज की स्थापना के बाद विद्वानों द्वारा पठित वर्ग में किये गए आन्दोलन की वर्णन करते हुए लिखा था कि एक मोर्चा ऐसा भी था, जिसमें ज्ञान गाम्भीर्य और अकूत विद्वत्ता के हथियार नहीं चलते थे, वह था ग्रामीण और अपठित जन सामान्य में प्रचार करना। आर्यसमाज के भजनोपदेशकों ने इस चुनौती को स्वीकार किया था और वह मोर्चा जीतकर दिखाया था। 'हरियाणा के आर्यसमाज का इतिहास' में मैंने उनका वर्णन किया है।

मेरे पिता चौ० श्रीचन्द आर्य भजनोपदेशक आयु में श्री चन्द्रभानु आर्य से बड़े थे, जिनका १९८२ में ७२ वर्ष की आयु में देहान्त हो गया था। उनका और चन्द्रभानु जी का दीर्घ काल तक मधुर मैत्री संबंध तो रहा ही, अनेक बार प्रचार के क्षेत्र में वे इकट्ठे भी रहे। जिन दिनों गुरुकुल कुम्भखेड़ा जिला हिसार की स्थापना हुई, उन दिनों तथा बाद में भी लम्बे समय तक चन्द्रभानु जी इस क्षेत्र में गुरुकुल की सहायतार्थ स्वामी रत्नदेव जी के निमंत्रण पर १५-१५ कोस पैदल चलकर भी प्रचार करने में कभी कष्ट अनुभव नहीं करते थे। उनका जीवन तप-त्याग का जीवन था। मैं चन्द्रभानु जी आर्योपदेशक से सन् १९६० से परिचित हूँ, जब मैंने गुरुकुल भैंसवाल कलां के वार्षिक उत्सव पर उनका एक भजन सुना था-

'चप्पल चुस्त पजामा चश्मा लीडर की पहचान है।'

तब मेरे पिताजी ने बताया था कि ये हमारे साथी प्रचारक हैं और चन्द्रभानु जी ने आशीर्वाद देकर कहा था-'गुरुकुल में रहकर पढ़ाई करते रहो, जीवन में सुख मिलेगा।' तब से लेकर सन २०१४ तक हजारों बार मिलना जुलना रहा। आर्यसमाज नागौरी गेट हिसार का भी मैं मंत्री रहा, तब भी और बाद में भी चन्द्रभानु आर्य जी का यहाँ प्रचारार्थ सतत आना जाना रहा।

अनेक बार पत्रकारिता के संदर्भ में उनसे बातें हुई तब पता चला वे एक सफल पत्रकार व लेखक भी थे। शांतिधर्मी पत्रिका और चन्द्रभानु आर्य जी के सम्पादकीय लेखों ने प्रबुद्ध पाठकों को तथा आर्यसमाजियों को विशेष रूप से प्रभावित किया है तथा सही दिशा प्रदान की है। मैंने कई बार उनके सम्पादकीय लेखन को पढ़ा तो अनुभव किया कि यह शांतिधर्मी पत्रिका की आवाज से भी बहुत कुछ अधिक है। इनका सम्पादकीय सम्पूर्ण समाज की आवाज का द्योतक है। शांतिधर्मी के सम्पादक, संचालक श्री चन्द्रभानु आर्य भजनोपदेशक यह सम्यक्तया समझते थे कि जनता लोकतंत्र की निर्मात्री होती है, अतः उसके समक्ष सभी प्रकार के समाचारों को विशद् रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। अन्ततः विचारों के संघर्ष से ही सत्य का प्रादुर्भाव होता है। श्री चन्द्रभानु जी अन्य लेखकों से भी प्रचलित रूचि के विषयों पर लेख मंगाते थे। यह पत्रिका को प्रभावशाली बनाने का श्रेष्ठ तरीका है। इसी कारण शांतिधर्मी पत्रिका ने आम लोगों के मन में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है। इसका सारा श्रेय आर्य भजनोपदेशक चन्द्रभानु आर्य सम्पादक को ही दिया जाना चाहिए। श्री चन्द्रभानु आर्य द्वारा लिखा गया सम्पादकीय लेख शांतिधर्मी

पत्रिका का हृदय होता था। सम्पादकीय के लेखक को अनेक विषयों का ज्ञान होना चाहिए। चन्द्रभानु आर्य जी के पास अनेक विषयों का अनुभव था। उनकी भाषा सरल होती थी। वे लिखते समय बुराई को बुराई करने वाले से अलग करके लिखते थे। कठोर भाषा के प्रयोग से बचते थे। उन्हें सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक इतिहास का समकालीन संदर्भ की दृष्टि से बहुत अच्छा ज्ञान था।

प्रो० बूल्सले के ग्रंथ 'जर्नलिज्म इन मॉडर्न इण्डिया' में स्टेट्समैन के ए० ई० चालेटन ने कहा है- 'स्वतंत्र भारत के मंच पर महान भारतीय सम्पादक का प्रादुर्भाव होना शेष है, ऐसे सम्पादक का- जो अपने समाचार-पत्र की प्रत्येक पँक्ति में अपने व्यक्तित्त्व का परिचय दे, जो अपने प्रत्येक कर्मचारी की पूर्ण निष्ठा प्राप्त कर सके।' श्री चन्द्रभान आर्य जी की पत्रिका शांतिधर्मी अच्छी पत्रिका है, जो यह प्रमाणित करती है कि उसके सम्पादकीय लेखों की पँक्तियों में आर्यसमाज की नींव के पत्थर आर्य भजनोपदेशक चन्द्रभानु जी का व्यक्तित्त्व दृष्टिगोचर होता था।

प्रतापसिंह शास्त्री एम० ए० पत्रकार, (९४६६३ २९१४७)
सम्पादक 'अपराजेय भारत' मासिक पत्र, हिसार

अन्तिम प्रेरक मिलन

जन्म और मृत्यु ईश्वरीय न्याय व्यवस्था है। यह अबाध गति से होता ही रहता है। पर कुछ महान पुरुषों का संसार में आना और जाना प्रेरणा स्तम्भ बन जाता है। इसे मैं घटना ही कहूँ कि संयोग--!

यूँ तो मेरा वैदिक संवाद हेतु पं० चन्द्रभानु आर्य जी से मिलना जुलना रहता था, पर इस बार मुझे महाशय जी से मिले महीनों हो गए थे। जब मैं उनसे मिलने गया तो वे चारपाई पर लेटे हुए थे। मेरे साथ मेरा एक और मित्र भी था। पूछने पर आर्य जी ने कहा कि पैर फिसलने से कूल्हे में मामूली चोट आई है। कुछ समय स्वास्थ्य बारे आर्य जी से बात हुई। इस दौरान उनकी निर्लिप्तता, धीरता, गंभीरता व वीरता देखते ही बनती थी, क्योंकि उनमें वीरता के साथ साथ क्षत्रियत्व भी था। मैं पास में खड़ा हुआ सोच रहा था कि इनके मरणोपरान्त इस मिशन का चलाना मुश्किल होगा। इससे तो ईश्वराज्ञा के कार्य की गति में मन्दता आएगी। मैंने ईश्वर से मन ही मन प्रार्थना की कि हे प्रभु! ऐसे लोगों के संसार से जाने से तो समाज की हानि होगी। और मैंने प्रार्थना की कि मेरी उमर इनको लगा दो। लेकिन ईश्वर को मेरी इच्छा मंजूर नहीं थी। होती भी क्यों?-- क्योंकि मैं भी तो पूर्ण ईश्वर विश्वासी नहीं था।

खैर-- यह बात मन ही मन कहकर और शांत स्वभाव आर्य जी की चारपाई के पास काफी भावुकता की स्थिति में खड़ा रहा। साथ आए मित्र ने शीघ्र चलने की इच्छा प्रकट की परन्तु मेरी चुपचाप वहीं खड़े रहने की इच्छा में प्रबलता थी। मैं चुपचाप विचार कर रहा था कि जैसे आर्य जी मूक संदेश दे रहे हैं और मैं सुन रहा था-

जो जन्म मिलता है वह बढ़कर जिया जाता है।
काम होता नहीं पर किया जाता है।
किनारे बैठना तो आराम करना है,
बीच तरंगों के जिया जाता है।।

मेरी मानसिक स्थिति ऐसी बनी हुई थी जैसे कि मुझे वे ऐसा करने के लिए प्रेरित कर रहे हों-

जीना तो है उसी का जिसने ये राज जाना,
है काम आदमी का औरों के काम आना।।

मुझे बार-बार कुछ अस्पष्ट सा आभास होता ही रहा और आर्य जी मूक भाषा में मुझे कुछ ऐसा कहते रहे-

मजा चलने का चलने वालों से पूछो।
रोशनी क्या है? स्वयं जलने वालों से पूछो।
केवल पुस्तकों से हल नहीं होते ये जीवन के प्रश्न,
इन्हें तूफानों में चलने वालों से पूछो।।

मेरे मित्र की इच्छा के अनुरूप जब मैंने चलने की मंशा दिखाई तो मुझे फिर अहसास सा हुआ कि जैसे वे कह रहे हों-

बरबाद चमन करने के लिए जब एक ही उल्लू काफी है,
हर शाख पे उल्लू बैठा है अन्जामे गुलिस्ताँ क्या होगा!!

यही प्रेरणा लेकर मैंने आर्य जी के चरण स्पर्श कर चलने की अनुमति मांगी और मुझे ऐसा लगा कि मेरे मित्र की विवशता को देखते हुए न चाहते हुए भी मुझे अनुमति मिल गई। मैं घर पर आया तो वही प्रेरणाएँ मुझे मानसिक तौर पर उद्विग्न कर रही थीं और रह रह कर प्रेरित व व्यथित भी कर रही थी।

जिस व्यक्तित्त्व ने पूरा यौवन देश प्रदेशों में घूम घूम कर वैदिक धर्म का शंखनाद किया हो, वृद्धावस्था में शांतिधर्मी नाम्नी मासिक पत्रिका के मुख्य सम्पादक के रूप में वैदिक धर्म का निष्ठा से विदेशों तक प्रचार करते हुए वाह-वाही लूटी हो, जो पत्रिका परिवार और समाज के उत्थान के लिए अग्रणी रह कर विश्व विख्यात हो, जिसका युक्ति युक्त तर्क और सम्पादकीय ऋषियों के तुल्य हो, जिनका सामाजिक मुद्दों, सनातन भारतीय संस्कृति व नवीन प्राचीन ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी पर विशेष अधिकार हो, जिनमें कर्मठता व कर्मण्यता का प्राचुर्य हो, उस ऋषितुल्य महामानव की

दिवंगत आत्मा के प्रति मुझ जैसे तुच्छ व्यक्ति के श्रद्धा सुमन सूर्य के सामने दीपक के समान हैं। हाँ, एक बात मैं अवश्य कहूँगा जो उनके जीवन पर खरी उतरती है–

यूँ तो जीने को तो सभी जिया करते हैं।
लक्ष्य जीवन का नहीं, फिर भी जिया करते हैं।
जीना सार्थक तो है उन्हीं का,
जो देश के लिए मर-मर कर जिया करते हैं।।

चौ० सुन्दर सिंह धर्मखेड़ी,
अध्यक्ष : जाट स्वाभिमान संगठन व
प्रवक्ता : खाप सातरौल (४५ गांव)
ग्राम धर्मखेड़ी, जिला हिसार

वे आर्यसमाज की एक महान विभूति थे।

विश्व में यदा-कदा ही ऐसी महान विभूतियाँ जन्म लेती हैं, जिनका शैशव अभावों, संघर्षों और विपत्तियों की पगडण्डी से प्रारम्भ होता है, परन्तु वे अपनी कठोर साधना, लगन, परिश्रम और दृढ़ निश्चय से सफलता के शिखर पर पहुंच ही जाते हैं। काँटों के रूबरू हुए बगैर गुलाब की फसल उगाई नहीं जा सकती। ऐसे लोग सोने की चम्मच लेकर पैदा नहीं होते परन्तु दूसरों को मोती चुगाने की क्षमता अवश्य रखते हैं। वे लोग केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समाज एवं राष्ट्र के लिए जीते हैं। जीवन की रेतीली पगडण्डी पर छोड़े उनके पदचिह्न सदियों तक अंकित रहते हैं। आर्यसमाज के इतिहास में ऐसे ही एक अतुलनीय उदाहरण हैं- चन्द्रभानु जी आर्य। उनका समग्र जीवन महर्षि दयानन्द प्रणीत वैदिक विचारों से ओतप्रोत रहा तथा न जाने उन्होंने कितने लोगों का जीवन निर्माण किया। वे आर्यसमाज की एक महान विभूति थे। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के लिए उनका जीवन समर्पित था। वैदिक धर्म और आर्यसमाज के सिद्धान्तों के दीवाने चन्द्रभानु आर्य त्याग और तपस्या की प्रतिमूर्त्ति थे।

पहले पहल विद्रोही और क्रांतिकारी भजनोपदेशकों की श्रेणी में अपनी अलग पहचान स्थापित करने में अग्रणी चन्द्रभानु आर्य का लोगों से कई रूपों में परिचय था। शरीर से बलिष्ठ व सुन्दर, अति मधुर स्वर, ऊँची सुरीली आवाज में गाने वाला, श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने वाला नवयुवक संभवतः नहीं देखा गया। स्वामी भीष्म जी के शिष्य चन्द्रभानु आर्य जब हारमोनियम से स्वर लहरी द्वारा बिना लाऊडस्पीकर के गानों की वर्षा करते थे तो वातावरण रोमांचक हो जाता था। मेरे पिता चौधरी श्रीचन्द आर्य भजनोपदेशक जो चन्द्रभानु आर्य के परम मित्र थे, वे बताया करते थे कि मैं और चन्द्रभानु जब गाते थे तो रोताओं की आवाज 'एक भजन और- एक भजन और सुनाओ' से गुंजायमान हो जाती थी।

महाशय चन्द्रभानु जी का समय आर्यसमाज के उत्थान का सुनहरा काल तो था ही, वह देश के लिए संघर्ष और बलिदान का समय भी था। आर्यसमाज के प्रचार के लिए वह युग भजनोपदेशकों का था। साधारण जनता साधु महात्मा, विद्वानों के उपदेश सुनने की अपेक्षा भजन सुनने में अधिक रूचि रखती थी। आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में भजनोपदेशकों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इन्होंने साधनों के अभाव में बड़े कष्ट उठाए हैं। गांव गांव में पैदल घूम घूम कर भूखा प्यासा रहकर भी आर्यसमाज का प्रचार करना उनके त्याग और तप का अनोखा उदाहरण है। चन्द्रभानु जी आर्य गले में हारमोनियम लटकाकर भी गांव की गलियों में सायंकाल व रात्रि में प्रचार करते थे। उन्होंने भोजन मिलने के अभाव में अपने थैले में से भुने हुए चने और गुड़ खाकर भी आर्यसमाज का प्रचार किया। मेरे पिता जी (चौ० श्रीचन्द आर्य भजनोपदेशक) उस समय की बातें बताया करते थे तो सुनकर मन क्लांत हो जाता था। चन्द्रभानु जी की वाणी में सरस्वती और लक्ष्मी दोनों का वास था।

लोग उन्हें वैचारिक क्रांति के सूत्रधार के रूप में देखते व सुनते रहे। दीर्घकाल तक (२०१४ के अन्त तक) लोगों ने देखा कि कितने ही आन्दोलन ऐसे हुए जिनमें महाशय चन्द्रभानु जी आर्य सरकारों के अच्छे जनहित कार्यों में मधुर भजनों से अपील करते थे, वहीं अनेक आन्दोलनों में सरकार की गलत नीतियों की मुखरता और प्रखरता के साथ आलोचना करके लोगों को आन्दोलित भी करते थे। उनका जीवन तन त्याग का जीवन था। दिल्ली में स्वामी भीष्म जी के पास रहते हुए भोगल बस्ती की एक विधवा निस्सन्तान माता इनको गोद लेना चाहती थी, लेकिन प्रचारक बनने की धुन में आपने उनकी लाखों की सम्पत्ति को ठोकर मार दी थी और उन्हें विनम्रतापूर्वक मना कर दिया था।

चन्द्रभानु आर्य जी का मेरे पास विद्यालय में आना जाना होता रहता था। वे थोड़े से शब्दों में गंभीर बातें कहते थे। दिल चाहता था उन्हें सुनते रहें। साक्षात्कार स्वरूप उन्होंने बताया था कि जब मेरी माता का देहान्त हुआ तब मैं सफीदों आर्यसमाज के उत्सव पर प्रचार कर रहा था। पिताजी के देहान्त के समय यमुनानगर में आर्यसमाज का प्रचार कर रहा था। उन्होंने विचार सांझा करते हुए बताया कि एक बार तुम्हारे पिता (चौ० श्रीचन्द आर्य) और मैं कैथल के किसी गांव में प्रचार करने गए थे। वहाँ हमें दूध तो बहुत मिला

लेकिन किसी ने भोजन के लिए नहीं पूछा। उस क्षेत्र में आर्यसमाज का प्रचार करने के लिए हमें गांव की चौपालों में ठहरना पड़ता था और भूखे प्यासे रहकर आर्यसमाज का प्रचार करते थे। तुम्हारे परिवार में किसी की मौत हो जाने पर चौ० श्रीचन्द आर्य दु:ख की घड़ी में भी सम्मिलित नहीं हो पाए थे।

चन्द्रभानु आर्य व अन्य अनेक उपदेशकों के साथ इतिहास ने न्याय नहीं किया। आर्यसमाज की इस महान विभूति पर हमें गर्व है। सचमुच उनके निधन से आर्यजगत् एक महान् प्रचारक से वंचित हो गया। यद्यपि वे भौतिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं, तथापि उनकी रचनाएँ, उनके मधुर संगीत की ध्वनि सदा गूंजती रहेगी। कवि के शब्दों में–

चला जाऊँगा मैं छोड़कर आशियाने को।
वफाएँ याद आएँगी मेरी इस जमाने को।।

महीपाल आर्य संस्कृत प्रवक्ता, ग्रा० मतलोढ़ा
हसला प्रधान हिसार मो० ९४१६१७७०४१

वे एक दबंग एवं साहसी कवि थे।

पं० चन्द्रभान आर्य भजनोपदेशक केवल एक भजनीक ही नहीं, अपितु एक महान् धार्मिक सैद्धान्तिक कवि भी थे। उनकी रचनाएँ वैदिक सिद्धान्तों पर ही आधारित होती थीं। वे एक दबंग एवं साहसी कवि थे। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से सामाजिक बुराईयों, राजनैतिक, धार्मिक पाखण्ड व अनैतिकता का बहुत ही खुले तौर पर और भावपूर्ण तरीके से अघमर्षण किया। राजनैतिक बुराई के संबंध में लिखा–

पानी का प्रबंध होना था शराब का प्रबंध होग्या।
गाम गली में समझदार का आना जाना बंद होग्या।।

ईश्वर भक्ति की उनकी रचनाएँ बहुत प्रसिद्ध हुईं, जो उपासना की विधि और ईश्वर के स्वरूप का विवेचन भी करती हैं–

है महिमा अपरम्पार मेरे भगवान तेरी।
कैसे शक्ति जाने पिता ईसान तेरी।।

इसी प्रकार योगाभ्यास की प्रेरणा देते वे लिखते हैं–

ओम का तू जाप करले बैठकर एकांत में।
योगाभ्यास से ही तेरा जीवन होगा शांतिमय।।

संसार की असारता और जन्म जन्मान्तरों के माध्यम से कर्म फल भोग का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा–

लाखों आए चले गए इस आवागमन के चक्कर में।
कल्प और महाकल्प बीत गए जन्म मरण के चक्कर में।।
कितनी बार हमें जन्म लिया जने किस-२ के घर याद नहीं।
कितनी बार हम बने दोपाये चौपाये पर याद नहीं।।

इसी प्रकार जीवन को सफल बनाने वाली और मानव को सही रास्ता दिखाने वाली उनकी अत्यंत उच्च कोटि की रचना है, जो भारत भर में गायी जाती है–

चोरी जारी छोड़ दिये और झूठ कभी मत बोल्या कर।
फेर तनै कोई चिन्ता कोन्या निर्भय होकर डोल्या कर।।

इसी रचना में विधि और निषेध का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है–

सुल्फा और शराब धतूरा भंग का पीना छोड़ दिये।
चौपड़ जुए सट्टे का है खेल कमीना छोड़ दिये।।
स्वाध्याय सत्संग संध्या इनको कभी ना छोड़ दिये।
गर ये तीनों छूट गए तो तू भी जीना छोड़ दिये।।

इस प्रकार उनकी रचनाओं में मनुष्य के नैतिक स्तर को ऊँचा उठाने का सुन्दर उपदेश किया गया है।

श्री चन्द्रभानु आर्य ने अपने लेखन, कविताओं और व्याख्यानों के द्वारा आर्यसमाज और मनुष्यता की अविस्मरणीय सेवा की है। आपने आर्यसमाज के गुरुकुलों और संस्थाओं का जो सहयोग किया है, वह कभी भूला नहीं जा सकता। आपने आर्यसमाज के द्वारा संचालित सभी आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया है। आर्यसमाज के हिन्दी आन्दोलन (१९५७) में आपने भूमिगत रहकर सत्याग्रही तैयार करने और आन्दोलन के लिए धन संग्रह करने में बड़ी भूमिका निभाई। बचते बचाते जब किन्नर गांव में सत्याग्रहियों को प्रोत्साहित कर रहे थे तो गिरफ्तार कर लिए गए और हिसार की बोर्स्टर जेल में रहे। आप की महानता इस बात से भी जानी जाती है कि जब भी कभी उत्सवों में भजनोपदेशकों की प्रतियोगिताएँ हुई तो आपने सदा प्रथम स्थान ही प्राप्त किया। आपकी चमत्कारी बुद्धि का मैंने कई बार दर्शन किया। एक बार गुरुकुल खरल के उत्सव में उनसे पहले बोलने वाले उपदेशक ने (नाम लेना उचित नहीं) सभी विषयों को उलझा दिया ताकि आगे बोलने वाले उपदेशक को नया विषय न मिले। उनके बाद पण्डित चन्द्रभानु जी को बोलना था। मैं पास ही बैठा था। मैंने पण्डित जी से कहा– अब आप क्या बोलोगे? तो पण्डित जी ने मुझे देशी भाषा में कहा– 'अब तेरे यार के हाथ देखना, क्या बोलेगा!' उन्होंने अपने एक घंटे के व्याख्यान में उन विषयों को छुआ भी नहीं, जिन पर पूर्व वक्ता बोल चुके थे। और ऐसा समां बाँधा कि पिछली बातों को तो लोग भूल ही गए। उनकी तेजस्वी ओजस्वी वाणी में एक अलग ही तरह का रस था। हमने उनको उनकी भरी जवानी के दिनों में सुना है। उनके बाजे पर हाथ रखते ही और ओ३म् की दीर्घ ध्वनि निकलते

ही श्रोताओं पर दबदबा सा छा जाता था। वृद्धावस्था में भी वे जिस स्वर में गाते थे, नौजवानों के लिए भी वह संभव नहीं था। आर्यसमाज का शायद ही कोई उत्सव होगा जिसमें आपकी कविताओं का अन्य उपदेशक गान न करते हों। भजनों के अलावा गद्य लेखन में भी उन्होंने प्रतिभा का डंका बजाया। आप द्वारा संचालित पत्रिका शांतिधर्मी अपना उदाहरण आप ही है जो सारे भारतवर्ष में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी है। पण्डित जी का सारा जीवन तापस मुनियों जैसा रहा। आपका गृहस्थ भी ऋषियों जैसा आदर्श गृहस्थ रहा। आपके सभी सन्तान धर्मात्मा, विद्वान् और परिश्रमी हैं। आपके पौत्र/पौत्रियाँ आर्यसमाज के मंचों पर बोलते हैं तो उनके संस्कारों का प्रत्यारोपण दिखाई देता है। यह आपके सफल गृहस्थ का प्रबल प्रमाण है कि आपकी सहधर्मिणी और आपका पूरा परिवार आपका अनुव्रती है।

मैं सार्वदेशिक सभा से प्रार्थना करता हूँ कि मरणोपरांत ही सही, पं० चन्द्रभान जी आर्योपदेशक को कम से कम कवि रत्न की उपाधि से सम्मानित करें।

पं० दयाकृष्ण आर्य, हिन्दी आन्दोलन जेलयात्री,
पुरोहित, आर्यसमाज जींद जंक्शन

वे माँ सरस्वती के प्रांगण के वट-वृक्ष थे

वर्ष २०१५ के प्रथम दिवस को अचानक भिवानी से अत्यन्त प्रिय अधिवक्ता नरेश सिहाग द्वारा एक हृदय विदारक समाचार प्राप्त हुआ कि आचार्य चन्द्रभान आर्य जी अपनी इहलोक यात्रा पूर्ण कर गए। सहसा मन स्वीकार नहीं कर पाया और श्री सहदेव जी से समाचार की पुष्टि हो जाने पर हृदय को गहन आघात लगा। हृदय चेतनाविहीन हो शून्य की ओर अग्रसर हो गया। प्रखर, निर्भीक पत्रकार व चिन्तक, कुशल सम्पादक तथा समय- समय पर समाज की बुराईयों पर व्यंग्य कसने वाले सफल व्यंग्यकार एवं लोकप्रिय व्याख्याता तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी के अनन्य सेवक आचार्य चन्द्रभान आर्य जी अचानक ही स्मृति पुरुष बन गये।

चन्द्रभानु आर्य जी, एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक संस्था थे। वे अपने आप में एक युग थे। उनकी कथनी, करनी में कोई फर्क नहीं था। वे जैसा कहते वैसा करते भी थे। वे हिन्दी, हरयाणवी, संस्कृत और उर्दू भाषा के विपुल भण्डार थे। आपने सदैव ही राष्ट्रभाषा हिन्दी को तरजीह दी और अन्त तक राष्ट्र-भाषा हिन्दी की सेवा में जुटे रहे।

आपने अपने सम्पूर्ण जीवन की आहुति महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा तथा आर्यत्त्व के प्रसार-प्रसार में लगा कर पूर्ण की। आप द्वारा सम्पादित पत्रिका शांतिधर्मी मात्र एक साहित्यिक पत्रिका नहीं है, आपने इसे एक अनुसंधान परक पत्रिका बना दिया है। आपने इसका प्रकाशन स्वयं अपने बलबूते पर किया और कितने ही अल्पज्ञात लेखकों को जीवन दिया। आप सभी उभरते कवियों और लेखकों को ससम्मान प्रकाश में लाए। कभी नये-पुराने, छोटे-बड़े का भेद नहीं किया। इस तरह आपने साहित्य सृजन के साथ साहित्यकारों का भी सृजन किया।

मैं जून १९८९ में सेना से सेवानिवृत्त हुआ। साहित्य से जुड़ाव था। १९९९ में 'काटड़ा' कहानी हरिगंधा में प्रकाशित हुई। शनैः शनैः पत्र पत्रिकाओं में स्थान पाता रहा। २००२ में कविवर श्रीकान्त प्रसाद सिंह जी (बिहार) के माध्यम से शांतिधर्मी से जुड़ाव हुआ। कुछ वीर-रस से जुड़ी कविताएं तथा दो तीन कहानियाँ आचार्य चन्द्रभानु जी के पास भिजवाई। जिन्हें उन्होंने सहर्ष समय-समय पर पत्रिका में स्थान दिया और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कहानी 'अनसुनी चीखें' सम्पूर्ण आर्य-जगत् और समाज में चर्चित हुई। आपके आशीर्वाद के रूप में मुझे एक नई ऊर्जा प्राप्त हुई, साथ ही एक विशाल वट-वृक्ष रूपी शांतिधर्मी गृह में स्थान मिला। जहाँ जाने-अनजाने, अपने-पराए सरस्वती पुजारी खग बन बसेरा लेते आ रहे थे। यह पूर्णतया सत्य है कि उन्होंने किसी से कोई भेदभाव नही किया। सदैव ही वट-वृक्ष की मानिंद अपने आश्रय में लेने का प्रयास किया।

महाभारत में आत्मबुद्धि को ही सच्चा तीर्थ कहते हुए कहा है-

आत्मा नदी संयम पुण्यतीर्था, सत्योदका शील तटा दयोर्मि।
तत्राभिषेकं कुरु पाण्डुपुत्र न वारिणा शुद्ध्यति चांतरात्मा।।

अर्थात हे पार्थ! आत्म शुद्धि के लिए आत्मा ही सरिता है, जहाँ संयम रूपी तीर्थ आते हैं, जिनमें सत्य रूपी निर्मल जल बह रहा है। विनम्रता, शील स्वभाव ही इस सरिता के किनारे हैं। इसमें सदैव ही दया रूपी तरंगें उठती रहती हैं। अतः इस तीर्थ में ही तू स्नान कर व आत्म शुद्धि कर। साधारण या किसी विशेष प्रकार के जल से आत्म-शुद्धि सर्वथा असंभव है। चन्द्रभानु आर्य जी के आचरण तथा व्यवहार से प्रतीत होता है कि उन्होंने आत्म शुद्धि स्नान कर लिया था, जिसके बाद किसी स्नान विशेष की आवश्यकता नहीं रह जाती। ऐसी विशुद्ध आत्मा का समय से पूर्व चले जाना, स्वजनों को तो अखरता ही है, साथ-साथ ही साहित्य और आर्य जगत और जन-मानस की अपार हानि है। उनके द्वारा दर्शाए गए मार्ग पर चलकर और उनके विचारों की गति दे पाएं, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सूबेदार धर्म सिंह
महम्मूद पुर माजरा जिला-झज्जर-१२४१३३

श्री चन्द्रभानु आर्य द्वारा २००३ में शांतिधर्मी परिसर में (अपने आवास) मासिक पूर्णिमा सत्संग का एक और महत्त्वपूर्ण प्रकल्प प्रारम्भ किया गया था, जो उनकी छत्रछाया में आज तक निरन्तर चलता रहा। इसी अवसर पर उनके द्वारा किया गया **अन्तिम प्रवचन** प्रस्तुत है–

ओं यज्ञाग्रतो दुरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवेति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। यजु०

हे मेरे परमपिता परमात्मा! जो मेरा यह मन, हवा से भी तेज चलनेवाला है। इसको चलने से रोक तो नहीं सकता कोई, पर इसके संकल्प शुभ हों, शुभ मनोकामनाएँ हों, यही मेरी प्रार्थना है। यही ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि मेरे संकल्प शुभ हों।

उपस्थित भाईयों, बहनो और बेटियो! जैसा कि अभी बताया जा रहा था कि इस सृष्टि को बने हुए एक अरब छियानवे करोड़ से भी अधिक वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। इनमें चार लाख बत्तीस हजार वर्ष का कलियुग है, आठ लाख चौंसठ हजार वर्ष का द्वापर है, १२ लाख छियानवे हजार वर्ष का त्रेता है और १७ लाख अट्ठाईस हजार वर्ष का सतयुग है। चारों युगों को मिला कर ४३ लाख २० हजार वर्ष होते हैं। इनको शास्त्रों की भाषा में चतुर्युगी कहते हैं और सामान्य भाषा में चौकड़ी भी कह देते हैं। ऐसी ७१ चतुर्युगियों का एक मन्वन्तर होता है। ऐसे छः मन्वन्तर इस सृष्टि को बने हुए पूरे बीत चुके हैं। सातवें मन्वन्तर की यह अट्ठाइसवीं चौकड़ी चल रही है। इसके बाद ७ मन्वन्तर तक और सृष्टि का समय है। इतने समय तक सृष्टि बनी रहती है। और इतना ही समय प्रलय का है। यह सृष्टि का प्रवाह भी दिन रात की तरह अनादि काल से चला आ रहा है और हम जन्म-जन्मान्तरों के माध्यम से अपने कर्मों का भोग सुख-दुःख आदि के रूप में भोगते आ रहे हैं। और इस प्रकार ३६००० बार के सृष्टि और प्रलय के समय तक मुक्ति प्राप्त करने वाला जीवात्मा आनन्द को भोगता है। इसलिए मैं कह रहा था कि मनुष्य जन्म पाकर हमें मोक्ष प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए और इसके लिए सच्चे मन से ईश्वर की भक्ति करते हुए अपने मन को शिवसंकल्पों वाला बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

देखो, पुरुषार्थ यही है। पुरुष क्यों कहते हैं मनुष्य को! पुरुषार्थ के कारण। पुरुषार्थ से सब कुछ बनेगा।
बिना किसी पुरुषार्थ के ही पुरुष कहाने वाले सुन।
अपने से कमजोरों का नित खून बहाने वाले सुन।।

पशुओं और मनुष्यों में पुरुषार्थ का ही तो अन्तर है। अब तो मनुष्य पशुओं से भी गया बीता हो गया है। मैं देखता हूँ कई बार-- यहाँ बगीचे में-- एक गिलहरी को रोटी का टुकड़ा डाला- एक दूसरी आई। वह उसकी रोटी का टुकड़ा उठाकर उनकी छत पर से होकर भागी। दोनों लड़ती लड़ती दूर चली गई। इस प्रकार कमजोर को तो पशु भी दबाते हैं। मनुष्य होकर भी ऐसा ही करते हैं तो पशुओं में और हम में अन्तर ही क्या रहा!

आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषः धर्मेण हीना पशुभिर्समानाः।।

खाना, पीना, सोना, डरना-- ये चीजें मनुष्य और पशुओं में बराबर होती हैं। बच्चे उनके भी होते हैं, हमारे भी होते हैं। सोते वे भी हैं, हम भी सोते हैं। वे भी खाते पीते हैं, हम भी खाते पीते हैं। ये पशुओं वाली वृत्तियाँ तो हैं, पर अच्छे गुण नहीं लेते पशुओं से! हे मनुष्य! अगर तू मनुष्य होने में बड़प्पन समझता है तो अपने अन्दर मनुष्य वाले गुण पैदा कर और अपने संकल्पों को शुभ बना।

हमें इस बात के महत्त्व को समझना चाहिए क्योंकि आयु पल प्रतिपल घटती जा रही है। बाल सफेद होते जा रहे हैं। कई भाई बहन तो अपने सफेद बालों को ढ़कने के लिए रंग लगा लेते हैं, मेहंदी लगा लेते हैं या और लीपापोती करने लगते हैं। ओ भोले भाई! हे भोली बहन, ये तो समय बीता जा रहा है। ये तो नोटिस है कि जवानी बीती जा रही है। इसको दुनिया से तो छुपा लोगे-- अपने आप से कब तक छुपाओगे? ये तो नोटिस है उस सर्वशक्तिमान का- कि जो कुछ करना है अभी कर ले, और जवानी में ही करले। सांसारिक दृष्टि से भी दिखावे का कोई लाभ नहीं है- सादा जीवन उच्च विचार--जितना सादा रहेगा उतना ही अच्छा रहेगा-- उतना ही आयु पूरी लेगा।

अभी अभी बेटियों ने एक गीत गाया था- मारने वाला भी तू ही है परमात्मा-- और बचाने वाला भी। परमात्मा जीवन देने वाला तो है-- प्राण शक्ति दे रहा है, वेद विद्या दी है। सुन्दर मनुष्य का शरीर दिया है, बुद्धि दी है, विवेक दिया है। मारने वाला परमात्मा कैसे? मरता तो मनुष्य खुद अपने दुष्कर्मों से है। अपने अशुभ संकल्पों से मरता है। परमात्मा तो बार बार चेतावनी देता है- लज्जा भय शंका के द्वारा-- उसने तो हमें भेजा है संसार में-- संसार के उपकार के लिए, अपने आत्मा की उन्नति के लिए और सर्वोत्तम सुख मोक्ष प्राप्त करने के लिए।

पण्डित चन्द्रभानु आर्य की कुछ प्रेरक रचनाएँ

अपने आप को भूल गया।

दुनिया के मेले में आकर अपने आप को भूल गया।
क्या करना था क्या नहीं करना पुण्य पाप को भूल गया।।

कहाँ से आया कहाँ जाएगा बैठ के नहीं विचार किया।
बलशाली से डरता रहा और निर्बल पर प्रहार किया।
छिद्रान्वेषी बना रहा कभी अपना नहीं सुधार किया।
निन्दा चुगली करी हमेशा पैसा ही आधार किया।।
कौन हूँ मैं और क्यों आया इस वार्त्तालाप को भूल गया।।१।।

हुई सगाई जब तेरी सत्संग में आना छोड़ दिया।
पत्नी आई मात पिता की सेवा ठाना छोड़ दिया।।
बच्चे पैदा होते ही तैने पीना खाना छोड़ दिया।
नशे विषय के चक्कर में ईश्वर गुण गाना छोड़ दिया।।
पैदा होते समय किया था उस आलाप को भूल गया।।२।।

बचपन तो गया खेल कूद में मस्त जवानी आई थी।
जिस ने तुझको दई सम्पदा उसकी याद भुलाई थी।।
धर्म कर्म और लाज शर्म की चादर तार बगाई थी।
विषयों में फँसकर के तूने सारी उम्र गंवाई थी।।
मोह ममता के फँसा जाल में निज माँ बाप को भूल गया।।३।।

दोनों समय बैठकर तूने कभी भी ध्यान लगाया ना।
यम नियमों का किया ना पालन प्राणायाम चढ़ाया ना।।
चित्त की वृत्ति खुली छोड़ दी मन पर काबू पाया ना।
मनसा वाचा कर्मणा का पाठ कभी अपनाया ना।।
चन्द्रभान अभ्यास बिना अब ओ३म् जाप को भूल गया।।४।।

आवागमन के चक्कर में

लाखों आए चले गए इस आवागमन के चक्कर में।
कल्प और महाकल्प बीत गए जन्म मरण के चक्कर में।।

कितनी बार यहाँ जन्म लिया तूने किस-२ के घर याद नहीं।
कितनी बार हम बने चौपाए दोपाए पर याद नहीं।
कितनी बार आकाश में चढ़कर टोहया सरोवर याद नहीं।
कितनी बार हम नारी बन गए कितनी बार नर याद नहीं।।
कितनी बार मरे बिन आई माया धन के चक्कर में।।१।।

कितनी बार यहाँ साधु बन गए पढ़ लिखकर योगी हो गए।
कितनी बार गृहस्थी होके दुनिया में भोगी हो गए।।
अधिक भोग के कारण ही हम कई बार रोगी होगे।
जब मृत्यु ने आकर घेरे संबंधी सोगी होगे।।
कई बार दुश्मन बन बैठे चाल चलन के चक्कर में।।२।।

कई बार स्थावर बन गए हम जमीं के अन्दर गड़े रहे।
कई बार कृमि बन करके दुर्गन्धी में सड़े रहे।।
कई बार हम माँ के गर्भ में नौ महीने तक पड़े रहे।
शेर बघेरे चीते बनकर पहाड़ के ऊपर खड़े रहे।।
कहीं कोई मारा कहीं आप मरे पेट भरण के चक्कर में।।३।।

कई बार हमने सोचा मन को कर लेंगे वश में।
पर मन तो वश में हुआ नहीं हम ही फंस गए गर्दिश में।।
मन वच कर्म एक हुआ ना जहर भर गया नस नस में।
कहें भीष्म सब उम्र बीत गई देखो आज कसमकस में।।
चन्द्रभान लगा दी जिन्दगी सत्य वचन के चक्कर में।।४।।

निर्भय होकर डोल्या कर

चोरी जारी छोड़ दिए और झूठ कभी मत बोल्या कर।
फेर तनै कोई चिन्ता कोन्या निर्भय होकर डोल्या कर।।

प्रातः उठ स्नान किया कर शुद्ध बुद्धि हो ज्या तेरी।
परमेश्वर का ध्यान किया कर शुद्ध बुद्धि हो ज्या तेरी।
शुभ कर्मों में दान किया कर शुद्ध बुद्धि हो ज्या तेरी।
विद्वानों का मान किया कर शुद्ध बुद्धि हो ज्या तेरी।।
प्राणायाम कर आसन लाकै पाप जाप से धो ल्या कर।।१।।

सुल्फा और शराब धतूरा भंग का पीना छोड़ दिए।
चौपड़ जूए सट्टे का ये खेल कमीना छोड़ दिए।
स्वाध्याय सत्संग संध्या इनको कभी ना छोड़ दिए।।
गर ये तीनों छूट गए तो तू भी जीना छोड़ दिए।।
किसी मनुष्य का गुप्त भेद तू बिन सोचे मत खोल्या कर।।२

मालिक की आज्ञा के बिना कोई चीज उठानी ना चाहिए।
साची भी हो प्यारी भी घणी खरी सुनानी ना चाहिए।।
इधर उधर की बातों में जिन्दगानी लानी ना चाहिए।
नारी कलम किताब गैर के हाथ में जाणी ना चाहिए।।
बुरे कर्म करने से तो अच्छा घर में पड़के सो ल्या तक।।३।।

लज्जा भय शंका हो जिसमें इसे काम को छोड़ दिए।
जिसमें हो अपमान तेरा इसे इन्तजाम को छोड़ दिए।
जहाँ अपना रक्षक ना कोई इसे गाम को छोड़ दिए।
जब तक मंजिल पर ना पहुंचे तू आराम को छोड़ दिए।।
'चन्द्रभान' बोलण तै पहले बात हमेशा तोल्या कर।।४।।

नित ओम को रट

नित ओम को रट वो है घट घट झटपट ना हट इन्सान।।

मत बो बबूल मारेगी शूल तू अमर झूल पै झूल।
चले प्रतिकूल बके ऊल जलूल कर रहा भूल पै भूल।।
रोम रोम में ओम बसा उस सोम का करले पान।।१।।

चंचल चपल चालाक चुस्त है ये तेरा चित चोर।
काल के गाल डाल चाल फिलहाल टाल कर गौर।।
भगवन के अर्पण कर जीवन तेरा मन है बड़ा शैतान।।२।।

संभल संभल कर अकल भरा छल बल का सकल संसार।
इस दल दल में फिसल फिसल कर मचल रहे नरनार।।
भृकुटि में देख वो एक नेक है लेख वेद प्रमाण।।३।।

कर योगाभ्यास हो तिमिर नाश प्रकाश वो तेरे पास।
पहाड़ समन्दर मन्दिर अन्दर मतना करै तलाश।।
कर भजन मगन हो इन्द्रिय दमन मिलें भगवन् **चन्द्रभान**।।४।।

शरीर-विज्ञान

आठ चक्र नौ द्वार की ये बनी अयोध्या नगरी।।टेक।।
ऐसा शिल्पी कौन था ये जिसने नक्शा किया त्यार।
पांच तत्त्व एक जगह कैसे मिला दिये यार।
इन पांचों को बांट दिए न्यारे न्यारे अधिकार।।
रूप, रस, गंध और स्पर्श को जानें आप।
आकाश की इन्द्रिय श्रोत्र जिससे शब्द सुनें साफ।
मन रूपी राजा बना जिससे होवे पुण्य पाप।
जहाँ भाव वैर और प्यार की नित अगनी सी है लगरी।।१।।
आठ चक्र इस नगरी में करते रहते काम खास।
मूलाधार चक्र जो कि बना है गुदा के पास।
अधिष्ठान चक्र देखो करना नित्य योगाभ्यास।
मणिपुर या नाभि चक्र नाभि के ही रहे साथ।
चन्द्र चक्र नाभि ऊपर सूर्य चक्र के पश्चात्।
हृदय चक्र फेफड़ों की रक्षा करे दिनो रात।
है नदी तीन प्रकार की सबको ममता है ठगरी।।२।।
चार वर्ण इस नगरी में गुणकर्मों के अनुसार।
सप्त ऋषि इसमें रहें जो करते हैं आर पार।
संतुलन बना के रखें पुरजे लागे कई हजार।।
एक पुर्जा बिगड़ जाए सारी ही मशीन बिगड़े।
कभी सूखी पीड़ मारै होके तेरा तीन बिगड़े।
डाक्टरों के खड़ा रहे हो जाए अधीन बिगड़े।
उस कारीगर करतार की हृदय में ज्योत है जग री।।३।।
दो है टेलीफान देख दुनिया भर से बात करैं।
दो हैं लाइट चसी हुई प्रकाश दिन रात करैं।
पांच शत्रु इस में रहैं सब के साथ घात करैं।।
आठ पैड़ी इसमें लगी ऊँचा पद दिलाने वाली।
ऊपर रखी चार मेवा सेवा से ही पाने वाली।
चन्द्रभान यही है वो मोक्ष में पहुंचाने वाली।।
रचना है उस दातार की जो ये दुनिया है सगरी।।४।।

ब्रह्म-ज्ञान

सृष्टि की आदि में यहाँ पर चार ऋषि हुए ब्रह्मज्ञानी।
अग्नि वायु आदित्य अंगिरा योग से वाणी पहचानी।।टेक।।

पुण्य कर्मों के जीव थे चारों लगा समाधि ध्यान किया।
उन चारों ने सबसे पहले प्राप्त वेद का ज्ञान किया।।
ओम का नामी जिसने रचकर तैयार ये सारा जहान किया।
ईश्वर का है ज्ञान सभी ये ऋषियों ने ऐलान किया।।
गुरुओं का है गुरु वही जो शिक्षा देता लासानी।।१।।

ईश्वर जीव और प्रकृति ये सत्ता तीन अनादि हैं।
सदा से हैं और सदा रहेंगे इनका अन्त न आदि है।।
जीव को कर्म फल पड़े भोगना करने में आजादी है।
जो दुनिया को मिथ्या कहता वो ही मिथ्यावादी है।।
जीव की खातिर रची ये दुनिया परमेश्वर की मेहरबानी।।२।।

चार वेद उपवेद चार हैं छः वेदों के अंग समझ।
उपनिषदों में खोल बताया बुद्धि होज्या दंग समझ।
काम क्रोध मद लोभ मोह ये करते रंग भदरंग समझ।
जड़ चेतन स्थावर जंगम का चलता रहता जंग समझ।।
तृष्णा के चक्कर में पड़कर क्यों करता है नादानी।।३।।

यम नियम का पालन करके बुद्धि शुद्ध बनाले तू।
भोग भोग मत रोग बढ़ावै योग मार्ग अपना ले तू।।
प्राणायाम चढ़ाकर अपना आसन सिद्ध जमाले तू।
मल विक्षेप आवरण अपने मन के दूर हटा ले तू।।
'**चन्द्रभान**' तज जन्म-मरण कर मोक्ष-वरण आत्मज्ञानी।।४।।

चिन्तन

मृत्यु अटल सत्य है

❒आचार्य वेदभूषण

जब मनुष्य शरीर के स्तर से ऊपर उठ जाता है तब मृत्यु नाम की कोई बाधा उसे पीड़ित नहीं कर सकती क्योंकि आत्मा न मरता है, न रूपान्तरित होता है। यह प्रकृति अर्थात् भौतिक शरीर रूपान्तरित होता है। यह विकृति से उत्पन्न होता है और फिर प्रकृति में लीन हो जाता है। प्रकृति के परमाणुओं में घुल-मिल जाता है। प्रकृति का यह रूपान्तण ही जीवन और मरण की एक गाथा है।

जीवन एक यात्रा है। जन्म वह स्टेशन है जहाँ से यात्रा आरंभ होती है और मृत्यु वह स्टेशन है जहाँ यात्रा समाप्त होती है। हम सब जीवन की रेलगाड़ी में चल रहे हैं। किसने कब कहाँ उतरना है यह हमें पता नहीं। कब सिग्नल गिरेगा और कब किसे कहाँ उतरना होगा इसकी सूचना समय आने पर ही मिलती है। यदि इसे पहले ही बतला दिया जाय तो इस चिन्ता में मनुष्य जीवन भावी के भय से बोझिल हो उठेगा और हँसता जीवन क्लेशमय हो जाएगा। इसलिए कब किसे शरीर त्याग करना है यह न बतला कर भी प्रभु ने हम पर महान् दया की है।

वह तो दयालु है। मृत्यु हमारे लिए वास्तव में उसकी सब से बड़ी दया है। जब हमारा शरीर कार्य करने के योग्य नहीं रह जाता और उसमें किसी प्रकार का सुधार भी संभव नहीं हो पाता तब प्रभु अपनी महान कृपा से उसे उसकी योग्यता के अनुसार नया शरीर प्रदान कर देता है। परमात्मा की इस कृपा को न जान कर हम अपने स्वार्थ और मोह के वशीभूत हो कर रोते और व्याकुल होते हैं। हम सोचते हैं कि कौन वह शक्ति है जो न चाहते हुए भी हमें मृत्यु की गोद में धकेलती है। अहा! आज हमें वह कितना निष्ठुर व क्रूर लग रहा है जो रुद्र बन कर हमें रुला रहा है। किन्तु हम ने कभी यह नही सोचा कि मृत्यु तो जीवन में एक बार ही आती है पर वह कौन है जो हमें जन्म से लेकर आज तक नाना प्रकार के सुख देता आ रहा है। हमें मिली हर साँस हमारे लिए कितना भारी सुख है। जब तक यह साँस सरलता से चलती है। तब तक कभी हमने इसे देने वाले के बारे में सोचा नहीं था। जब एक साँस कठिन बन जाती है तो हम उस दयालु को निष्ठुर, क्रूर पता नहीं क्या क्या बतलाते हैं।

स्मरण कीजिए- जब प्यारे प्रभु ने हमें जीवन दिया था तब इस जीवन रूपी पौधे को हरा भरा रखने, पल्लवित व विकसित करने के लिए उस रचयिता ने माँ के स्तन में अमृत जैसा दूध दिया था। चन्द्रमा की कला के समान हम विकसित होने लगे। माँ के दूध के बाद माँ का स्थान गो माता ने लिया। कुछ काल तक उस का दूध पीकर हम पुष्ट हुए। पुनः इस धरती माता के माध्यम से उसने हमें अनेक प्रकार के अन्न, फल, फूल आदि उपलब्ध कराये। ये धरती, ये आसमान, ये बहता शीतल वायु, अमृत के समान जल और समस्त उपहारों में श्रेष्ठ अग्नि भी उसी कृपालु ने प्रदान की है। पर कृतघ्न मनुष्य उसकी कृपा को भूल जाता है।

किसी भी व्यक्ति की मृत्यु तब होती है जब उसका शरीर रूपी रथ जी सकने में सर्वथा असमर्थ या बेकार हो जाता है। उसके सुधार की सब आशाएँ धूमिल हो जाती हैं। तब वह कृपालु अपने प्यारे पुत्र के कष्ट को देख नहीं पाता और अपनी असीम कृपा से उस असमर्थ व बेकार देह को ले लेता है और फिर उसे उसकी योग्यता के अनुसार एक नया रथ प्रदान कर देता है। जैसे कोई पिता अपने पुत्र की पुरानी कार या मोटर को बदल कर नई मोटर दिला देता है ठीक उसी प्रकार जब हमारा शरीर कार्य करने के सर्वथा अयोग्य हो जाता है, तब दयालु पिता उसे बदल देते हैं। इस परिवर्तन का नाम हमने मृत्यु रख लिया है। गीता में कृष्ण भगवान कहते हैं-

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृह्णाति नरोपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णानि,
अन्यानि संयाति नवानि देही।।

जिस प्रकार पुराने वस्त्रों को त्याग कर हम नये वस्त्र धारण कर लेते हैं, ठीक उसी प्रकार आत्मा जीर्ण देह को छोड़ कर कर्मानुसार नया देह प्राप्त कर लेती है। सत्य तो यह है कि जिस दयालु ने हमें यह शरीर दिया है, उस शरीर का स्वामी भी वही परमात्मा है। अपनी दी हुई वस्तु को जब वह वापिस ले लेता है तो हमारा शोक एक प्रकार का लोभ ही है। परमात्मा की वस्तु को हमने अपनी वस्तु मान लिया है और रो रहे हैं कि प्रभु हमारी चीज ले गए हैं। स्मरण रखिए- इस शरीर के स्वामी हम नहीं है। हमें तो यह केवल प्रयोग के लिए दिया गया है।

इस संसार का प्रत्येक पदार्थ मूल रूप से उसी

परमेश्वर का बनाया हुआ है। इसीलिए इस दुनिया की छोटी से छोटी वस्तु में भी यह भावना नहीं रखनी चाहिए कि यह मेरी है। जब हमारी अपनी देह पर ही हमारा अधिकार नहीं है तो फिर दूसरे के देह पर अपना अधिकार मानना या किसी के देह त्याग पर रोना न्याय संगत नहीं है। इसीलिए यजुर्वेद के अंतिम अध्याय के मंत्र १ में कहा गया है कि–

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।

इस जगत् में जो कुछ भी जगत् के नाम से जाना जाता है उस सब का स्वामी एक वही परमात्मा है। वह प्रभु सृष्टि के कण–कण में व्याप रहे हैं इसलिए कभी भूल कर भी उस प्रभु की संपत्ति को अपना मान कर लोभ की दृष्टि से मत देखो, किसी दूसरे की वस्तु पर ललचाओ नहीं।

हमारे आत्मीय परिवार के दुःखी सदस्यो! वेद माता की यह कितनी सत्य और प्यारी शिक्षा है। इसे समझ कर आप अपने शोक को दूर कर दीजिए। जाने वाले को जब तक हम अपना समझते हैं, तभी तक का शोक है। जब हम इस सत्य को जान लेगे कि जाने वाली आत्मा पर हमारा अधिकार तभी तक था जब तक कि वह जीवित था। अब हमारा अधिकार समाप्त हो गया है। इस यथार्थ को समझना चाहिए। शोक की घड़ी हमारी परीक्षा की घड़ी होती है इसलिए ज्ञान और विवेक को जगा कर हम इस सत्य को अंगीकार करें और धैर्य जो धर्म का पहला लक्षण है उसे धारण करें। इस संकट की घड़ी में हमें परखना है कि हम ने जीवन में धर्म को कितने अंश में धारण किया है। धर्म बाहर की उपदेश की वस्तु नहीं है धर्म तो उन्हीं सद्गुणों का नाम है जिन्हें कि धारण करना होता है। दिवंगत के प्रति किया गया शोक एक प्रकार का दुराग्रह है। परमात्मा की इच्छा के प्रतिकूल एक विद्रोह है।

हर जन्म लेने वाले की मृत्यु अवश्यंभावी है और हर मरने वाले का फिर जन्म लेना भी निश्चित है। गीता में कहा गया है।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।।

जो चीज उत्पन्न होती है, वह मरती भी है। जिस चीज का आरंभ है, उस का अन्त भी सुनिश्चित है। मृत्यु इस सृष्टि का अटल नियम है। इस अटल नियम के सन्मुख सिर झुकाना चाहिए, अतः शोक करना व्यर्थ है। प्रकृति के नियम बड़े कठोर हैं। वह किसी की चीख पुकार नहीं सुनती। उसने आज तक किसी पर दया नहीं की। चाहे भगवान राम हों, चाहे भगवान कृष्ण, चाहे महावीर हों चाहे बुद्ध, चाहे मोहम्मद पैगम्बर हों, चाहे ईसा मसीह। बड़े से बड़ा महापुरुष हो, चाहे बड़े से बड़ा सम्राट् या शहंशाह! चाहे सन्त हो, चाहे महात्मा, चाहे फकीर हो, चाहे भिक्षुक, राजा से लेकर रंक तक सब को एक दिन मौत अपने पंजे में कस लेती है।

कोई कितनी ही प्रार्थना करे चाहे दुआ माँगे। चाहे कितने ही कंठ करुणा भरे स्वर में पुकार करें, मृत्यु जब आना चाहती है, आ ही जाती है। संसार के हर कोने में, बड़े से बड़े महल में और छोटी से छोटी झोंपडी में यह मृत्यु या मौत बेरोक टोक आ जाती है। चाहे कितना ही जोर लगाया जाय, चाहे करोड़ों रूपयों की अमृत घूंटी या संजीवनी दी जाय, सब व्यर्थ और सर्वथा बेकार साबित हो जाती है।

क्या इस विराट् धरती पर कोई एक छोटा सा कोना ऐसा है! जहाँ इस काली मुख वाली मौत के चरणों की धूल न पड़ी हो। परमात्मा की प्रलयंकारी इस शिव की शक्ति का यह नृत्य सृष्टि के आदि से अनवरत रूप में चला आ रहा है। अन्तर केवल समय का होता है। कल वहाँ है, आज यहाँ है। कल फिर और कहीं यही दृश्य देखा जा सकता है। अरे नादान! तू दूसरों की मृत्यु पर अश्रु बहा रहा है, पर ध्यान रख! उस मृत्यु के पंजे से तू भी नहीं बचेगा। जितना समय बीतता चला जा रहा है उतनी उतनी हमारी मृत्यु भी हमारे निकट आती चली जा रही है।

महात्मा बुद्ध के पास एक माँ अपने बच्चे के शव को लेकर विलाप करती हुए पहुंची। उसने सुना था बुद्ध बहुत पहुंचे हुए सिद्ध पुरुष हैं। साथ ही बड़े दयालु भी हैं। हो सकता है वे मेरे प्यारे शिशु को फिर से जिला दें। बड़ी आशाओं से भरी रोती बिलखती वह भोली महिला बुद्ध के चरणों पर गिर पड़ी और अपने मृत शिशु को महात्मा बुद्ध के चरणों पर धर दिया।

महात्मा बुद्ध ने कहा–देवी! मैं तेरे बच्चे को बड़ी सरलता से जीवित कर दूंगा, पर एक शर्त है कि तू किसी ऐसे घर से एक मुट्ठी भर चावल ला दे जिस घर या परिवार में आज तक किसी की मृत्यु न हुई हो।

पुत्र शोक में पागल हुई वह देवी नगर की ओर लपकी कि ऐसे परिवार को खोज कर शीघ्र ही मुट्ठी भर चावल ले जाऊँ जिससे मेरा यह कलेजे का टुकड़ा जी जाए। वह घूमते–घूमते थक गई। हर घर में कोई न कोई मर चुका था। किसी की माँ, किसी की दादी, किसी की नानी, दादी नहीं तो परदादी, नानी नहीं तो परनानी, दादा या परदादा, पिता, चाचा या मामा, कोई न कोई अवश्य मर चुका था।

वह बेचारी निराश और हताश लौट आई। महात्मा बुद्ध तो उसे केवल मृत्यु की अनिवार्यता समझा रहे थे। मौत ने आज तक किसी को नहीं बख्शा। अतः इस बात को

समझ लो कि मृत्यु एक अनिवार्य फल है, जिसे सभी को एक न एक दिन चखना ही पड़ेगा।

इसलिए हम कहते हैं ऐ नादान! यह मृत्यु तुझे अपनी मृत्यु का स्मरण कराने आई है। हर मृत्यु पथ पर गड़ा हुआ एक मील का पत्थर है, जो हमें रास्ता दिखलाती है। रोने की आवाज से मृत्यु की काली रेखा मिटाई नहीं जा सकती। मृत्यु एक ध्रुव सत्य है। इसने पीरों, पैगम्बरों और महापुरुषों को भी नहीं छोड़ा तो फिर हम जैसे साधारण पुरुषों की तो बात ही क्या है?

इसलिए मेरे शोकाकुल परिवार के दु:खी सदस्यो! मत घबराओ, हिम्मत बनाए रखो। हर जन्म लेने वाले की मृत्यु अवश्यंभावी है और हर मरने वाले का फिर जन्म लेना भी निश्चित है, इस सत्य को हमें समझना होगा। हमें विश्वास है कि आप प्रभु के इस नियम के सन्मुख न्याय व्यवस्था के सामने अपना शीश झुकाएंगे। हम सब मिल कर इस मंत्र का पाठ करें।

ओ३म य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवा, यस्यच्छायामृतं यस्य मृत्यु: कस्मै देवाय हविषा विधेम।

आत्म ज्ञान और बल का दाता विश्व जिसे अपनाता है,
देव प्रशंसा जिस की करते वही मरण का दाता है,
जिसकी दया असीम से मिलता सब को जीवनदान है,
कौन नियन्ता अर्चन किसका? जो सुख रूप महान् है।

धर्म-प्रचारक

❒श्री जगत्कुमार शास्त्री

कनिक्रदज्जनुषं प्रब्रुवाण:,
इयर्ति वाचमरितेव नावम्।
सुमंगलश्च शकुने भवासि,
मा त्वा काचिदभिभा विश्वया विदत्।।

ऋ० २/४२/१

शब्दार्थ : (शकुने) हे शक्तिसम्पन्न धर्म-प्रचारक! तू (जनुषम्) जनवर्ग को (प्रब्रुवाण:) उपदेश देता हुआ (कनिक्रदत्) मेघ के समान गर्जना कर रहा है, जैसे (अरिता) मल्लाह (नावम्) नाव को चलाता है, (एवम्) ऐसे ही तू (वाचम्) अपनी वाणी को (इयर्ति) संचालित करता है। (च) और सब के लिये (सुमंगल:) सब प्रकार से मंगलकारी (भवासि) होता है। (त्वा) तुझे (विश्वया) संसार में काचिद् कोई भी (अभिभा) अपमान, (मा विदत्) न प्राप्त हो।

भावार्थ : हे सामर्थ्यवान् धर्म-प्रचारक! तू मेघ के समान गंभीरतापूर्वक गर्ज-गर्ज कर जनता को अनेक प्रकार के उत्तमोत्तम उपदेश दे रहा है। तेरी वाणी उसी प्रकार सावधानी से चलती रहती है, जिस प्रकार किसी किश्ती को खेते समय मल्लाह-खेबट का चप्पू चला करता है। तू सभी प्रकार से हमारा मंगल-साधन कर रहा है। हमारी यह हार्दिक इच्छा है कि संसार में कहीं भी तुम्हारा निरादर न हो और तुम्हारे लिये किसी वस्तु की कमी न रहे।

प्रवचन

लौकिक संस्कृत भाषा के विद्वान् वेद के ''शकुनि:'' शब्द का अर्थ पक्षी-परिन्दा, वा पक्षी विशेष करते हैं। यह अर्थ ठीक होने पर भी सुसंगत नहीं है। क्योंकि ऐसा पक्षी कोई कहीं है ही नहीं, जो मल्लाह के चप्पू के समान अपनी वाणी का संचालन करे, मेघ के समान गर्जे, जनता को उपदेश दे, जनता के लिए सुख की वृद्धि करे और उसके लिए सर्वत्र आदर प्राप्ति की कामना जनता की ओर से की जाये, अत: वेद विचारकों को यौगिक अर्थ प्रणाली और निरुक्त शास्त्र का आधार लेकर वेदों के सच्चे अर्थों को प्राप्त करना चाहिए भद्दे अर्थों से बचना चाहिये। महर्षि यास्क ''शकुनि:'' शब्द के पाँच अर्थ दर्शाते हैं :-

१- शकुनि: शक्नोत्युन्नेतुमात्मानम्। शकुनि उसे कहते हैं, जो अपने आप को ऊपर ले जा सकता है। इस अर्थ के अन्तर्गत पक्षी मात्र का ग्रहण हो तो सकता है, परन्तु अन्य अर्थों का भी विचार होना आवश्यक है। अन्य अर्थों के सहचार से सुस्पष्ट है कि जो मनुष्य अपने आप को सांसारिकता और साधारणता के ऊपर उठा लेता है, उसे शकुनि कहते हैं।

२- शक्नोति नदितुमिति वा। अथवा शकुनि उसे कहते हैं, जो नाद करने में समर्थ हो। जो शब्द-ब्रह्म का मर्मज्ञ और स्वर शास्त्र का भी ज्ञाता हो। जो भाषा विस्तार तथा ध्वनि व्यापार संसार में हो रहे हैं, 'नाद' के ही वे विभिन्न रूप हैं।

३– शक्नोति तर्कितुमिति वा। जो क्रान्तदर्शी अर्थात् दूरदर्शी होता है, उसे शाकुनिः कहते हैं। सभी दार्शनिक और ऊहा सम्पन्न विद्वान् इस अर्थ के अनुसार शाकुनिः हैं।

४– सर्वतः शंकरोऽस्त्विति वा। अथवा उसको शाकुनिः कहते हैं, जो सब प्रकार से सभी के लिए कल्याणकारी होता है। सच्चे कल्याणसाधक और वाणी द्वारा उपदेश देकर जनता को अमृतपान करवाने वाले होने से धर्म प्रचारक ही वास्तव में शाकुनिः शब्द का ठीक अर्थ है।

५– शक्नोतेर्वा। शक्ति के होने पर भी ''शाकुनिः'' कहा जाता है। धर्म प्रचारकों में आत्मिक, मानसिक, चारित्रिक, शारीरिक और विद्या बल आदि होते ही हैं और होने भी चाहियें। ये पाँचों प्रकार के अर्थ तो उच्चकोटि के धर्म प्रचारकों के जीवन और गुण, कर्म एवं स्वभाव में ही सुसंगत होते हैं। ऐसा करने पर ही वेद का गौरव बढ़ सकता है, अन्यथा नहीं।

अब यहाँ ''मंगल'' शब्द का विचार कर्त्तव्य है। जो निगल सकता है, वह ''मंगल'' कहलाता है। किसको निगल सकता है? अनर्थों को निगल सकता है। जो दूसरों को भी अपने समान ही समझता है, वह भी ''मंगल'' ही है। जो पाप को दूर कर देता है, धो डालता है, वह भी मंगल ही है। जिसकी सभी लोग कामना किया करते हैं, वह सुख भी मंगल कहलाता है, जो सच्चा धर्म प्रचारक होता है, वह तो स्वयं कष्ट उठाकर भी दूसरों को सुख पहुँचाता है। धर्म–प्रचारकों को गालियाँ भी खानी पड़ जाती हैं और भी बहुत सी बुरी बातें पचानी पड़ती हैं। वे सभी को अपने समान समझते हैं। सभी के मलों–दोषों को निवारते हैं। अतः धर्म प्रचारकों का मंगलकारी होना भी स्पष्ट है।

जब जब अवसर आये, तब तब प्रजा का प्रति–निधि धर्म–प्रचारक का अभिनन्दन करके, उससे कहे–

भगवान्! आप अपनी आत्मोन्नति करने में समर्थ हुए हैं, आप डंके की चोट, ललकार कर अपनी खरी बात कह सकते हैं, आप तत्त्व दर्शन और भावी का अनुमान करने में समर्थ हैं। सर्वत्र सुख, शान्ति की स्थापना और वृद्धि का लक्ष्य सफल हो रहा है। और, आप की शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक शक्तियाँ भी सुविकसित एवं प्रखर हैं। आपको अपने बीच में पाकर हम श्रोताओं को हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

आप के दर्शन प्राप्त हुए। उपदेशामृत पान करने को मिला। यह हमारे परम सौभाग्य का विषय है। सचमुच हमारे लिये तो आप का अस्तित्व और व्यक्तित्व एक धर्म मेघ के समान है गरजो! गरजो!! गरजो!!! गरज गरज कर, बरसो, उपदेश गंगा का प्रवाह सब ओर प्रवाहित कर दो। आनन्दामृत बरसाकर, सबको निहाल कर दो। कुछ गाओ, कुछ सुनाओ। कुछ पिलाओ। हमें बेसुध बना दो। हमारे पाप ताप, हमारे भय संकट, दुःख द्वन्द्व, अविद्यादि जन्य सब प्रकार के भ्रम और रोग दूर भगा दो। हमारे हृदय की बगिया को हरी भरी कर दो। आप की संगति और आप के उपदेशों से हमारी सब प्रकार की भ्रान्तियाँ दूर हो जायें, क्लेशों के सब प्रकार के बन्धन कट जायें, मन के सब मैल छूट जायें।

जब आप उपदेश प्रदान करते हुए वाणी संचालन करते हैं, तब हमें ऐसा प्रतीत होता है, मानो कोई मल्लाह, भंवर में फंसी हुई, किसी किश्ती को पार लगाने के लिए, सावधानी के साथ अपना दृढ़ चप्पू चला रहा है। आपके शब्दों में, आप की चेष्टाओं में और आप की भावभंगिमाओं में हमें अपने नव जीवन का सन्देश प्राप्त होता है और आशावाद की झलक दिखाई देती है। आप हमारे उदय के अनुक्रम हमारे सामने प्रस्तुत कर देते हैं। आपके इस प्रयास के फलस्वरूप हमें अपने मल, संकट और दोष दूर होते हुए प्रतीत होते हैं। हमारी उन्नति हो रही है। इसका अनुभव हम कर रहे हैं।

हे शाकुने! आप को हमारा नमस्कार! हमारे दोषों का निवारण कीजिये। युग युगान्तरों के पाप संस्कारों की मैल आपके पुण्य प्रताप से ही दूर होगी। आपकी कृपा से हमारा उत्तरोत्तर कल्याण होगा। आपकी योजनाएं सफल हों। आपके आशीर्वाद सफल हों, सब उत्तम कार्यों में हम आपके साथ हैं। हमारे एवं हमारे देश तथा जाति के हित के लिये जब जब भी आप कोई विशेष कार्य आरम्भ करेंगे, तब तब ही हम तन, मन और धन से आप का अनुगमन करेंगे और आप के आदेशों का पालन करेंगे।

आप का जीवन त्याग, तप और बलिदान का जीवन है। उत्तम मर्यादाओं का संरक्षण और संसार के सुख समुदाय का संवर्धन आप का उत्तम लक्ष्य है। आप उस गौरवमयी परम्परा के प्रतीक हैं जो सहस्रों शताब्दियों से मानवता का पथ आलोकित करती हुई आ रही है। हे धर्म दूत! हमें भूल न जाना। हमारी सुध लेते रहना। हमें बारम्बार अपना उपदेशामृत पिलाते रहना। हम बारम्बार आपका धन्यवाद करते हैं।

सुख देवें दुख को हरें, दूर करें अपराध।
कहे कबीर वे कब मिलें, परम स्नेही साध।।

योग का मुख्य प्रयोजन सांसारिक दुःखों से छूटना?

लेखक : ब्र० ज्ञान प्रकाशार्य: आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल कालवा, जिला जीन्द (हरियाणा)

यह सत्य है कि सांसारिक वस्तुओं के साथ हमारा सम्बन्ध नित्य रहने वाला नहीं है। इन विषय भोगों को अधिकाधिक भोग कर कोई व्यक्ति अधिक स्थायी पूर्ण सुख प्राप्त नहीं कर सकता। उपर्युक्त सत्य के समान ही यह भी अटल सत्य है कि ईश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध सदा से था, आज भी है और आगे भी रहेगा। इस सम्बन्ध यजुर्वेद में मंत्र है-

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियम्
अग्नेज्योर्तिर्निचाय्य पृथिव्या अध्याभरत्। यजुर्वेद ११/१

पदार्थ : (युञ्जानः) योग को करने वाले मनुष्य (तत्त्वाय) तत्त्व अर्थात् ब्रह्म ज्ञान के लिये (प्रथमं मनः) जब अपने मन को पहले परमेश्वर में युक्त करते हैं। तब (सविता) परमेश्वर उनकी (धियम्) बुद्धि को अपनी कृपा से अपने में युक्त कर लेता है (अग्नेर्ज्यो०) फिर वे परमेश्वर के प्रकाश को निश्चय करके (अध्याभरत) यथावत् धारण करते हैं (पृथिव्याः) पृथिवी के बीच योगी का यही प्रसिद्ध लक्षण है। -ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका (उपासना विषय)

योग का महत्त्व : हम इस प्रकार से समझ सकते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति समस्त दुःखों से छूटकर नित्यानन्द को प्राप्त करना चाहता है। जब तक व्यक्ति योग दर्शन में प्रतिपादित हेय, हेय हेतुः, हान और हानोपाप के स्वरूप को अच्छी प्रकार से नहीं जानता तब तक समस्त दुःखों की निवृत्ति और नित्यानन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती।

आज के मनुष्य ने घोर पुरुषार्थ किया है और करता भी जा रहा है। सारी पृथिवी का स्वरूप ही बदल डाला है। तदुपरान्त भी वह समस्त दुःख की निवृत्ति और नित्यानन्द की प्राप्ति नहीं कर पाया। इसी प्रकार चलते रहने पर भविष्य में भी मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति की कोई संभावना नहीं है। आज का मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेषादि मानसिक रोगों से दुःखी है। जिसका समाधान वह केवल धन-सम्पत्ति वा भौतिक विज्ञान से करना चाहता है, जिससे कदापि सम्भव नहीं हो सकता। इन मानसिक रोगों का समाधान तो आत्मा-परमात्मा सम्बन्धी अध्यात्म विद्या को पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने और इसको क्रियात्मक रूप देने से ही सम्भव है, अन्यथा नहीं।

आज वर्तमान में योग के स्थान पर योगा शब्द ही अधिक सुनने में आता है। इस योगा का व्यावहारिक रूप सामने यह आ रहा है कि जब व्यक्ति सांसारिक भोगों को सुख की इच्छा से अमर्यादित रूप में भोगता है तो उस कारण रोगी हो जाता है। तब कुछ शारीरिक व्यायामादि आसनों को करके भोगों को भोगने की क्षमता पुनः प्राप्त करने को योगा कहा जाता है। अर्थात् भोगों की इच्छा से प्रेरित व्यक्ति जब भोगने की क्षमता प्राप्त करने की इच्छा से योगा करना चाहता है। परन्तु योग का यह तात्पर्य नहीं है। सामान्य भाषा में योग को जोड़ कहते हैं, पर यह गणित के योग का अर्थ है। योग दर्शन योग का अर्थ 'युज समाधौ' आत्मनेपदी दिवादिगणीय धातु में 'घम्' प्रत्यय लगाने से निष्पन्न होता है। अतः योग का अर्थ समाधि अर्थात् चित्त वृत्तियों का निरोध है। योग का स्वरूप क्या है। इसका समाधान समाधिपाद के दूसरे ही सूत्र में किया।

योगश्चित्तवृत्ति निरोधः (यो० १/२)

इसका शाब्दिक अर्थ है- चित्त की वृत्तियों के निरोध को समाधि अर्थात् योग कहते हैं। इस सूत्र में चार शब्द हैं। (१) योग (२) चित्त (३) वृत्ति (४) निरोध। पहला योग का अर्थ तो हम पूर्व ही जान चुके हैं कि समाधि अर्थात् ईश्वर के स्वरूप में मग्नता है।

(२) चित्त को समझें कि यह क्या है। योग दर्शन में जो चित्त है वह मन का ही पर्यायवाची है। हमारे दो प्रकार के करण हैं- (१) अन्तःकरण (२) बाह्य करण। अन्तःकरण के चार भेद जाने जाते हैं- मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार। बाह्यकरण में ५ ज्ञानेन्द्रियाँ व ५ कर्मेन्द्रियाँ आ जाती हैं। इसमें अन्तःकरण में जो मन है वह इन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त ज्ञान को भीतर पहुँचाता है तथा अन्दर संगृहित ज्ञान को बाहर पहुँचाता है। बुद्धि संग्रहित ज्ञान के आधार पर पक्ष व विपक्ष में जो भारी हो उसका निर्णय देती है। चित्त वह होता है, जो बाहर से प्राप्त ज्ञान व अनुभव को स्मृति रूप में संग्रहित करता है। अंहकार अपने होनेपन का बोध कराता है।

योग दर्शन में जिसे चित्त कहा जाता है, वह प्रकृति

से बना पदार्थ है। प्रकृति का स्वभाव जड़ है। कारण के गुण कर्म स्वभाव कार्य में आते ही हैं। अतः चित्त एक जड़ पदार्थ है। यह सभी जीवों के पास होता है। परन्तु यह पांच अवस्था वाला है।

(१) क्षिप्त : चंचल अवस्था वाला

(२) मूढ़ : अज्ञान व मोह से ग्रस्त अवस्था है।

(३) विक्षिप्त : कभी स्थिर व कभी अस्थिर को कहते हैं।

(४) एकाग्र : अवस्था जो स्थिर चित्त को कहते हैं।

(५) निरुद्ध : सभी प्रभावों से रहित अवस्था वाला।

इनमें से उत्तम योग निरुद्धावस्था में प्राप्त होता है। इस अवस्था में ही ईश्वर का साक्षात्कार होता है, अन्य में नहीं।

अब तीसरा शब्द है- वृत्ति। जिससे मन व चित्त अपना बाहर-भीतर करता है, उसे वृत्ति कहते हैं। वृत्तियों के मुख्य दो भाग होते हैं। एक क्लेशयुक्त अर्थात् दुःख पैदा करने वाली, दूसरी क्लेश रहित अर्थात् दुःख पैदा न करने वाली। इन्हें योग दर्शन की भाषा में क्लिष्ट और अक्लिष्ट कहते हैं। जैसे कि योग दर्शन में कहा

वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाक्लिष्टाः। यो० १/५

अर्थात् वृत्तियाँ पांच प्रकार की होती हैं। उनके भी क्लिष्ट और अक्लिष्ट ये दो मुख्य विभाग हैं। जो वृत्तियाँ मनुष्य को अज्ञान, अधर्म, अनैश्वर्य तथा अवैराग्य की ओर ले जाती हैं वे क्लिष्ट हैं अर्थात् दुःख देने वाली; जो ज्ञान, धर्म, वैराग्य, ईश्वर की ओर ले जाती हैं वे अक्लिष्ट हैं।

हमारी वृत्तियाँ कहाँ जा रही हैं, या हम उन्हें कहा भेज रहे हैं। कहाँ भेजना चाहिए व कैसे भेजना चाहिए, इस कला को जानना ही योग है। काम, क्रोध, लोभ, अहंकार आदि से सम्बन्धत कुसंस्कारों को नष्ट करने का उपाय वे विषय क्रमशः हेय, हेय हेतु, हान तथा हानोपाय है, जिसको धारण कर मनुष्य सम्पूर्ण दुःखों से बच सकता है।

(१) हेय : इसका स्वरूप महर्षि पतञ्जलि जी ने योग दर्शन के सोलहवें सूत्र 'हेयं दुःखमनागतम्' में स्पष्ट किया है। इसे इस प्रकार समझ सकते हैं कि जो दुःख भूतकाल में भोग लिया है, वह छोड़ने योग्य नहीं है, क्योंकि वह अब भोक्ता के समीप नहीं है और जो दुःख वर्तमान क्षण में भोगा जा रहा है, वह आगामी क्षण में नहीं रहेगा। उसका भी त्याग नहीं हो सकता है। अत एव जो भविष्य कालिक दुःख है, वही छोड़ने योग्य है। इस दर्शन में इसी का पारिभाषिक नाम हेय है, उससे ही बचा जा सकता है।

(२) हेय हेतु - द्रष्टृदृश्ययोः संयोगो हेयहेतु।

योग दर्शन द्वितीय पाद

हेय हेतु का अर्थ है दुःख कारण। जीवात्मा का समस्त प्राकृतिक पदार्थों के साथ जो अज्ञानपूर्वक सम्बन्ध है, वह हेय हेतु कहलाता है।

(३) हान :

तदभावात्संयोगाभावो हानं तद् दृशेः कैवल्यम्। (यो० २/२५)

उन अविद्यादि क्लेशों का अथाव होने पर द्रष्टा (जीवात्मा) और दृश्य (प्रकृति) के संयोग का अभाव हो जाता है। वह हान है, वही जीवात्मा का कैवल्य है।

(४) हानोपाय : विवेकख्यातिरविप्लवा हानोपायः।।

योग २/२६

जब व्यक्ति को वैराग्य होता है, तब उसका ज्ञान बढ़ता रहता है, परन्तु लौकिक संस्कारों के कारण सम्प्रज्ञात समाधि मध्य मध्य में भंग होती रहती है। यहाँ पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि ईश्वर साक्षात्कार होते ही योगी मोक्ष का भागी नहीं होता। मोक्ष का अधिकारी बनने के लिए दीर्घ काल पर्यन्त अभ्यास की अपेक्षा रहती है, तथा यम-नियमों के पालन से ईश्वर प्राणिधानादि साधनों से अविप्लव अवस्था में ले जाना तथा मिथ्याज्ञान की निवृत्ति और पर वैराग्य की उत्पत्ति होती है। पर वैराग्य से असम्प्रज्ञात समाधि की सिद्धि और ईश्वर साक्षात्कार होता है। यह सब अभ्यास और वैराग्य के द्वारा निरोध किया जाता है।

अभ्यास वैराग्याभ्याम् तन्निरोधः।।

योग० १/१२

अभ्यास और वैराग्य से ही उसका निरोध हो सकता है। निरोध का अर्थ है प्रवाह को बदलना। यहाँ अनेक साधक भ्रमवश निरोध से रोकना अर्थ लेते हैं। जबकि चित्त को रोका नहीं जा सकता है। रोकने से तो दोगुनी और शक्ति से आक्रमण करता है। चित्त रूपी नदी दो और बहने वाली है। एक कल्याण के लिए विवेक वैराग्य की ओर बहती है और दूसरी पाप के लिए अज्ञान अविद्या एवं भोगों की ओर बहती है। करना यह होता है कि अविद्या भोगों वाले प्रवाह को विवेक व वैराग्य के बांध से रोककर कल्याण मार्ग की और प्रवाह को बदल देते हैं। परन्तु दृढ़तापूर्वक बलात् इन्द्रियों को रोकने वाले का तो वैसा ही हाल होगा जैसे नदी के प्रवाह को रोक देवें, पर जल को किसी दूसरी ओर प्रवाहित न करें। कालान्तार में जल उस बांध को तोड़कर और भयंकर रूप में प्रवाहित होगा जो बाढ़ के समान विनाशकारी होगा। निरोध का ऐसा अर्थ मानने वाले और गहरे गड्ढे में जाते हैं। अत एव निरोध का अर्थ हुआ ज्ञानपूर्वक, विद्यापूर्वक प्रवाह को बदलना।

सम्पूर्ण विवेचन से योग का मुख्य प्रयोजन सांसारिक दुःखों से छूटना है, जिसको विस्तार से कह दिया।

महर्षि दयानन्द जी

।।ओ३म्।।

''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्''

महर्षि दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव (शिवरात्रि) व अखिल भारतीय विद्वत सम्मान समारोह निमन्त्रण

श्रद्धेय सज्जन,

महान् युग पुरुष, क्रांतिकारी, समाज सुधारक, धार्मिक उन्नायक, राष्ट्रभक्त, धर्मनिष्ठ, महादानी, दलितोद्धारक, निर्भीक, शिक्षाप्रेमी, स्पष्टवादिता एवं स्वतंत्रता आन्दोलन के ज्योतिस्तम्भ, महर्षि दयानन्द सरस्वती के बौद्धोत्सव (शिवरात्रि) प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी **17 फरवरी 2015 (मंगलवार)** को **आर्य समाज घण्टाघर चौक, भिवानी (हरियाणा)** में बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष के वैदिक, हिन्दी साहित्य, जन सेवा, शिक्षा, शोध, पर्यावरण संरक्षण इत्यादि के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान करने वाले स्त्री-पुरुषों को सम्मानित किया जायेगा। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाऐं।

कार्यक्रम

महर्षि दयानन्द के बौद्ध दिवस पर यज्ञ व भजन : प्रातः 10 बजे से 12 बजे तक

सम्मान समारोह व पुस्तक विमोचन समारोह : दोपहर 12 बजे से सायं 4 बजे

अध्यक्ष	:	**डॉ. विनोद चन्द्र विद्यालंकार,** पूर्व सह निदेशक, मुद्रणालय गो.ब.पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंत नगर (उत्तराखण्ड)
		श्री राधेमोहन राय, पूर्व उप प्राचार्य, राजकीय पी.जी. कला महाविद्यालय, अलवर
मुख्य अतिथि	:	**प्रो. सत्यवीर कलोहिया,** प्राचार्य राजकीय कन्या महाविद्यालय, भिवानी
		श्री रमेश चन्द्र बूरा, प्राचार्य, राजकीय कन्या सी.सै. स्कूल, भिवानी
		श्री श्रीपाल आर्य, बागपत (शिष्य स्वामी भीष्म)
		श्री एस.के. बत्रा, मुख्य प्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा, भिवानी
स्वागताध्यक्ष	:	**श्री वेदप्रकाश आर्य,** प्रधान आर्य समाज घण्टाघर, भिवानी
		श्री इन्द्र सिंह आर्य, पूर्व एस.डी.एम., भिवानी
विशिष्ठ अतिथि	:	**डॉ. राधाकृष्ण गणेशन,** भारत कला भवन, वाराणसी
		डॉ. पंडित बन्ने, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, राजकीय महा. सोल्हापुर (महाराष्ट्र)
		श्री सुबेदार धर्मसिंह, जहाजगढ़ (झज्जर)
		प्रो. डॉ. ललिता वी. जोगड़, समाजसेविका, मुम्बई (महाराष्ट्र)
		साहित्यश्री डॉ. मन्जू विद्यावाचस्पति, हिन्दी सेविका

सहयोगी संस्थाएं

शान्ति धर्मी (मासिक) जीन्द 09416253826, गुगनराम सोसायटी बोहल 0946653 2152, डी.एम. ज्वैलर्स, भिवानी 09896545792, हिन्दुस्तान पावर टूल भिवानी 093 15517276, भिवानी न्यूज भिवानी मो. 09812968002, दीप प्रकाशन भिवानी 0941619443 71, मनभावन प्रिन्टर्ज भिवानी मो. 09812526277

नोट : इस अवसर पर अगर आप पुस्तक विमोचन करवाना चाहते हैं तो मंत्री रामफल आर्य से सम्पर्क करें। धन्यवाद!

प्रधान :	प्रैस सचिव :	मंत्री
वेदप्रकाश आर्य	डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट	डॉ. रामफल आर्य
0981213 3669	0946653 2152	093 15517276

हार्दिक आभार व निवेदन

आप सभी महानुभावों ने हमारे पूज्य पिताजी के देहान्त पर पधारकर हार्दिक सहानुभूति और आशीर्वाद प्रदान कर हमें संबल प्रदान किया है उसके लिए हम आपका हृदय से आभार प्रकट करते हैं। जिन महानुभावों ने पत्र दूरभाष या ईमेल से अपने सांत्वना संदेश भेजे है उनके भी हम आभारी हैं। इस अंक के तैयार होने के साथ साथ अनय भी संदेश आ रहे हैं, जिन्हें हम आगामी अंकों में प्रकशित करेंगे। यह अंक अत्यंत शीघ्रता से निकाला गया है। कृपया पूज्य पिताजी के लिए अपनी श्रद्धांजली और संस्मरण डाक या ईमेल से यथाशीघ्र इस पते पर प्रेषित करने की कृपा करें।

सम्पादक शांतिधर्मी,
756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक, जींद–१२६१०२
EMail- shantidharmijind@gmail.com
दूरभाष : 094165 45538, 094162 53826, 098964 12152
निवेदक : रमेशचन्द्र आर्य, सहदेव शास्त्री, रवीन्द्र कुमार आर्य (पुत्र)

चन्द्रभानु आर्य : व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व

शांतिधर्मी के संचालक और प्रधान सम्पादक व आर्यजगत् के महान् भजनोपदेशक श्री पण्डित चन्द्रभानु आर्य के विराट् व्यक्तित्त्व को जानने और जनाने के लिए 'चन्द्रभानु आर्य : व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व' बृहदाकार ग्रंथ पर पिछले एक वर्ष से कार्य चल रहा है। इस ग्रंथ में पण्डित जी की रचनाओं, जीवन यात्रा, संस्मरणों; साहित्यकार, कवि और उपदेशक के रूप में उनके योगदान पर प्रकाश डाला जाएगा। उनके सभी परिचितों, मित्रों, सहयोगियों, संबंधियों, श्रद्धालुओं, शिष्यों, संबंधित संस्थाओं के पदाधिकारियों से निवेदन है कि उनसे संबंधित संस्मरण, चित्र, आदि या किसी पुस्तक, स्मारिका आदि में उनका उल्लेख यदि आपके पास उपलब्ध है तो कृपया डाक या ईमेल से भिजवाने की कृपा करें। अन्यथा हमें सूचित करने का कष्ट करें। हम स्वयं आकर उन्हें स्केन/फोटोप्रति के रूप में प्राप्त करेंगे। शांतिधर्मी में प्रकाशित और अभी प्राप्त हो रहे संस्मरणों का भी उक्त ग्रंथ में सादर उपयोग किया जाएगा।

सम्पादक शांतिधर्मी,
756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक, जींद–१२६१०२
EMail- shantidharmijind@gmail.com
दूरभाष : 094165 45538, 094162 53826, 098964 12152
निवेदक : रमेशचन्द्र आर्य, सहदेव शास्त्री, रवीन्द्र कुमार आर्य (पुत्र)

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक सहदेव द्वारा अपने स्वामित्व में, प्रियंका प्रिंटर्स पुरानी सब्जी मण्डी जींद के लिए ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६१०२ (हरि०) से २४-०१-२०१५ को प्रकाशित।

4 जनवरी 2014 को श्रद्धांजलि सभा में गणमान्य व्यक्ति अपने संस्मरण सांझा करते हुए।

श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित गणमान्य व्यक्ति एवं परिजन